कर्णाटक-जैन-कवि ।

लेखक—

नाथूराम प्रेमी ।

B. V. PRESS.

Printed by C. S. Deole, in the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road Bombay.

AND

Published by Nathuram Premi, Proprietor Jain-Grantharatnakar Karyalaya, Hirabag-Bombay.

२८८७

कर्णाटक-जैन-कवि।

अर्थात्

कनड़ी भाषाके ७५ जैन कवियोंका

संक्षिप्त परिचय

जैनहितैषीसे उद्धृत।

देवरी (जिला सागर) निवासी

नाथूराम प्रेमी।

प्रकाशक—

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय

हीराबाग, गिरगाँव—बम्बई।

बम्बईवैभव प्रेसमें छपा।

श्रीवीर नि० सं० २४४०।

प्रथमावृत्ति] जून सन् १९१४। [आधा आना

Printed by C. S. Deole, in the Bombay Vaibhav Press,
Servants of India Society's Building, Sandhurst
Road Bombay.

AND

Published by Nathuram Premi, Proprietor Jain-
Grantharatnakar Karyalaya, Hirabaga-Bombay.

प्रस्तावना ।

प्राचीन साहित्यके अन्वषेण, आलोचन और प्रकाशनसे धीरे धीरे इस बातका निश्चय होता जाता है कि जैन विद्वानोंने भारतकी प्रायः सभी भाषाओं-के साहित्यको अपनी अनन्यसाधारण प्रतिभासे आलोकित किया है ।

संस्कृत–प्राकृतसाहित्यको जैन विद्वानोंने बहुत पुष्ट किया है–न्याय, व्याकरण धर्मशास्त्र, काव्य, इतिहास गणित आदि प्रत्येक विषयके ग्रन्थोंकी उन्होंने रचना की है । इस बातको तो अब प्रायः सभी लोग स्वीकार करने लगे हैं । परन्तु इस बातको और तो क्या शायद जैनी भी न जानते होंगे कि सुदूरकी कनड़ी भाषाके साहित्यको भी उन्नतिके शिखर पर पहुँचानेमें जैन विद्वानोंने निःसीम परिश्रम किया है और उक्त साहित्यमें अपना नाम सदाके लिए अमर कर दिय है । इस छोटीसी पुस्तकके पाठसे पाठकों पर हमारे उक्त कथनकी सत्यता प्रकट हो जायगी ।

जहाँ तक हम जानते हैं हिन्दीसाहित्यमें कर्णाटकके कवियोंका परिचय करानेवाली यह सबसे पहली पुस्तक है । हिन्दी ही क्यों बंगला, मराठी, गुज-राती जैसी प्रौढ़ भाषाऐंमें भी कर्णाटकसाहित्यसम्बन्धी लेख क्वचित् ही दृष्टि-गोचर होते हैं । क्योंकि इन भाषाओंके जाननेवालेंके लिए कनड़ी भाषा बहुत कठिन और अपरिचित है । लोग इच्छा रहने पर भी उसके साहित्यके विषयमें कुछ अभिज्ञता प्राप्त करनेके साधन नहीं पा सकते । जिस समय यह पुस्तक जैनहि-षीमें क्रमशः निकल रही थी, उसी समय बंगला भाषाके प्रसिद्ध पत्र ‘ ढाका–रिव्यू ’ में इसका अनुवाद प्रकाशित होने लगा था–उसके सम्पादकने इसे बहुत महत्त्वकी चीज़ समझा था । इससे पाठक समझ सकेंगे कि यह पुस्तक किस श्रेणीकी है ।

इसमें केवल कनड़ी भाषाके कवियोंका ही परिचय नहीं है; किन्तु इससे संस्कृत और प्राकृतके उन नामी नामी आचार्यों तथा विद्वानोंका समयादि भी मालूम होता है जो संस्कृत प्राकृतके सिवा कनड़ीके भी कवि थे अथवा कर्णाटकी कवियोंसे जिनका गुरुशिष्यादिका सम्बन्ध था और जिनसे हम लोग प्रायः बिलकुल ही अजान थे । अतएव इस लेखसे संस्कृतसाहित्यके इतिहास पर भी बहुत कुछ प्रकाश पड़ेगा ।

कनड़ी भाषामें ‘ कर्णाटक–कवि–चरित ’ नामका एक ग्रन्थ है । इस ग्रन्थमें कनड़ी भाषाके कई कवियोंका परिचय दिया गया है और प्रत्येक कविके जितने उपलब्ध ग्रन्थ हैं, उनमेंसे प्रत्येक ग्रन्थके विषय, उसकी रचनाके नमूने, उसका

महत्त्व, ग्रन्थनिर्माणसमय आदि सब बातोंकी खूब विस्तारके साथ आलोचना की गई है। जब हमने सुना कि इस ग्रन्थमें बहुतसे जैन कवियोंका भी चरित है, तब हम अपनी उत्कण्ठाको न रोक सके और कनड़ी भाषाका ज्ञान न होनेपर भी हमने इसे मँगा लिया। अब हमें बातकी चिन्ता हुई कि किसी कनड़ी भाषा जाननेवाले सज्जनसे इसका अनुवाद कराया जाय; परन्तु कठिनाई यह हुई कि कनड़ी जाननेवाले हिन्दी नहीं जानते और हिन्दी जाननेवाले कनड़ीसे कोरे। अन्तमें हमें ऐसे सज्जनोंसे अपनी इच्छा पूर्ण करना पड़ी, जो थोड़ी थोड़ी हिन्दी जानते हैं अथवा मुश्किलसे अपने भाव हिंदीमें प्रगट कर सकते हैं। ये सज्जन अपनी हिन्दीमें ज्यों त्यों करके जो कुछ लिख देते थे या समझा देते थे, उसे हम अपनी भाषामें संस्कृत करके लिख लेते थे। इन सज्जनोंमें एक तो श्रीयुक्त व्येंकटराव नामके महाशय हैं। आप यद्यपि जैनी नहीं हैं, तो भी आपने उदारता और प्रसन्नतापूर्वक कोई ३०–३२ कवियोंका परिचय लिख देनेकी कृपा की। आपकी इस कृपाके हम अतिशय आभारी हैं। दूसरे सज्जन मोरेना जैन पाठशालाके विद्यार्थी श्रीयुक्त वासुदेवजी उपाध्याय हैं और तीसरे सज्जन कारकल (सौथ कनाड़ा) जैन पाठशालाके अध्यापक श्रीयुक्त के० कुमारय्या महाशय हैं। शेष ४० कवियोंका परिचय आप ही दोनों महाशयोंके परिश्रमका फल है। आपके भी हम बहुत ही अनुग्रहीत हैं।

यद्यपि यह सारा लेख 'कर्णाटककविचरित' के ही आधारसे लिखा गया है और इसलिए हम उसके लेखक महाशयके बहुत ही कृतज्ञ हैं, तथापि जिन कवियोंसे हम परिचित हैं अर्थात् जो कनड़ीके समान संस्कृतके भी कवि हैं उनके विषयमें हमको और भी जो जो बातें मालूम थीं वे सब इसमें शामिल कर दी गई हैं। ऐसी बातोंके लिए कर्णाटककविचरितके लेखक नहीं, किन्तु हम स्वयं उत्तरदाता हैं।

इस प्रकारकी नीरस पुस्तकोंकी हिन्दीमें कोई पूँछ नहीं, इसलिए इसका पृथक् पुस्तकाकार निकालना कठिन था; परन्तु हम मोहोल (शोलापुर) निवासी सेठ शिवलाल मोतीलालजीके अत्यन्त अभारी हैं कि उन्होंने इसके प्रकाशित करनेके लिए अपने धर्मादाय खातेकी ओरसे ४०) की सहायता दी और अब यह उन्हींकी कृपासे प्रकाशित होती है।

चन्दाबाड़ी, बम्बई
श्रुतपञ्चमी, श्रीवीर नि०
सं० २४४०

नाथूराम प्रेमी।

कर्णाटक-जैनकवि।

पाठकोंने कर्णाटकी अथवा कनड़ी भाषाका नाम अवश्य सुना होगा। द्राविड़ीय भाषाओंमें यह एक श्रेष्ठ भाषा समझी जाती है। जिस तरह हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि भाषायें संस्कृतजन्य गिनी जाती हैं, उस तरह कनड़ी भाषा नहीं गिनी जाती। यद्यपि संस्कृत प्राकृतके शब्दोंकी इसमें भी कमी नहीं है तो भी बहुतसे भाषाकोविदोंके मतसे यह द्रविड़ जातिकी भाषाओंमें अन्यतम है। तामिलभाषाके समान यह भी बहुत प्राचीन भाषा है और इसका व्याकरण भी संस्कृतके समान सर्वांगपूर्ण है। जिस समय हिन्दी, बंगला, मराठी आदि भाषाओंका जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय कनड़ी भाषाका साहित्य हज़ारों ग्रन्थरत्नोंसे परिपूर्ण हो रहा था! ईसाकी नववीं शताब्दिमें इस भाषाका फैलाव उत्तरमें गोदावरीके तीरसे लेकर दक्षिणमें कावेरी नदी तक हो रहा था। अर्थात् उस समय मध्यप्रांत, बरार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, निजाम, दक्षिण, मैसूर, कुर्ग, कनारा, उत्तर मलेबार आदि अनेक प्रदेशोंमें इस भाषाका प्रसार और प्राबल्य था। यद्यपि इस समय वह बात नहीं रही है तो भी यह मैसूर, कुर्ग, निजामराज्य, मध्यप्रान्त और बरारके पश्चिमभागमें, बम्बईप्रान्तके दक्षिणी जिलोंमें और मद्रासके उत्तर पश्चिम तथा दक्षिणके अनेक जिलोंमें बोली जाती है।

कनड़ी भाषाको उन्नत प्रौढ़ और परिपूर्ण करनेका प्रथम श्रेय जैनाचार्यों और जैनकावियोंको दिया जाता है। यद्यपि ईसाकी दूसरी तीसरी सदीमें वनवासदेशके कदंबवंशीय राजाओंके दरबारमें बुद्धधर्मके उपदेशक जाया करते थे और उस समय वे कनड़ी भाषाका ज्ञान सम्पादन करके उसमें ग्रन्थरचना भी करते थे—ऐसा पता लगा है बल्कि उनके बनाये हुए कई ग्रन्थ भी उपलब्ध हुए हैं, तो भी यह निर्विवाद है कि जैनियोंके हाथसे ही कनड़ी भाषाका उद्धार हुआ है और उन्हींने इस भाषाके साहित्यको एक उच्चश्रेणीकी भाषाके योग्य बनाया है। ऐसा अनुसंधान किया गया है कि ईसाकी तेरहवीं सदी तक कनड़ी भाषामें जैनग्रन्थकारोंके सिवा

अन्य धर्मके ग्रन्थकार ही नहीं हुए हैं। अर्थात् तेरहवीं शताब्दि तक कनड़ी भाषाके जितने ग्रन्थकर्त्ता हुए हैं, वे सब जैनी ही हुए हैं। इससे इस बातका भी अनुमान होता है कि, उस समय कनड़ी भाषाभाषी प्रदेशोंमें जैनधर्मका कितना अधिक प्राबल्य था। गंगवंशीय, राष्ट्रकूटवंशीय (राठौर), चालुक्यवंशीय, (सोलंकी), और हयसालवंशीय राजाओंके दरबारोंमें तथा सौदत्ति, विजयनगर मैसूर और कारकलके राजाओंके यहां जैनकवियोंका बड़ा सम्मान रहा है। उस समय जैनकवियोंके सुयशके गीत सारे कर्णाटक देशमें गाये जाते थे। परन्तु आगे यह बात न रही। रामानुजाचार्यके वैष्णवमतका प्रसार होनेसे और उसके पश्चात् बसवेश्वर (बसप्पा) के 'लिंगायत' मतका प्रचार होनेसे तथा कलचुरि राजवंशके नष्ट होनेसे जैनधर्मका ह्रास होने लगा और इसके साथ ही कनड़ीमें जैनकवियोंका होना भी कम होने लगा। तो भी उसके पीछेके कनड़ीसाहित्यसे जैनकवियोंका सर्वथा नामशेष नहीं हो गया। फिर भी सैकड़ों जैनकवि कनड़ी साहित्यकी शोभा बढ़ाते रहे। यह बात निःशंक होकर कही जा सकती है कि कनड़ी साहित्यके जितने प्राचीन, अर्वाचीन, काव्य, उपन्यास, नाटकादि ग्रन्थ इस समय उपलब्ध हैं, उनमेंसे लगभग दो तिहाई ग्रन्थ जैन विद्वानोंके बनाये हुए हैं।

जैनधर्ममें मुख्य दो सम्प्रदाय हैं एक दिगम्बर और दूसरा श्वेताम्बर। इनमेंसे दक्षिण और कर्णाटकमें केवल दिगम्बर सम्प्रदायका ही अधिक प्राबल्य रहा है। ऐसा मालूम होता है कि वहाँ श्वेताम्बरसम्प्रदायका प्रवेश ही नहीं हुआ। दक्षिण और कर्णाटकका जितना जैनसाहित्य है, वह सब ही दिगम्बर सम्प्रदायके विद्वानोंकी रचना है। जहाँतक हमको मालूम है श्वेताम्बर सम्प्रदायका कोई भी प्रौढ़ विद्वान् उस ओरको नहीं हुआ। इतिहासके पाठकोंके लिए यह प्रश्न बहुत ही विचारणीय है।

एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि जिस कर्णाटक प्रान्तमें हजारों वर्षतक दिगम्बराचार्यों और कवियोंकी सरस्वतीका अतिशय मनोमुग्धकारी नृत्य होता रहा, वहीं अब दिगम्बर सम्प्रदायकी सबसे अधिक दुर्दशा है—जैनधर्मका सामान्यस्वरूप समझनेवाले भी वहाँ नहीं हैं।

इस बातको सुनकर सब ही आश्चर्य करेंगे कि दिगम्बरसम्प्रदायके जितने प्रधान प्रधान आचार्य इस समय प्रसिद्ध हैं, वे प्रायः सब ही कर्णाटक देशके

निवासी थे और वे न केवल संस्कृत प्राकृत मागधीके ही ग्रन्थकर्त्ता थे—जैसा कि उत्तर भारतके जैनी समझते हैं, किन्तु कनड़ीके भी प्रसिद्ध ग्रन्थकार थे। समन्तभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, अकलंकभट्ट, नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती, भूतबलि, पुष्पदन्त, वादीभसिंह, पुष्पदन्त (यशोधरचरितके कर्त्ता), श्रीपाल आदि आचार्य जो दिगम्बर सम्प्रदायके स्तंभ समझे जाते हैं, और जिनके संस्कृत प्राकृत ग्रन्थोंका हमारे उत्तर भारतमें बहुत प्रचार है, प्रायः कर्णाटकी ही थे।

यद्यपि कनड़ी भाषाके जैनकवियों और ग्रन्थकारोंके समय आदिका निर्णय करनेके लिए जितने साहित्यकी आवश्यकता है, इस समय उतना साहित्य उपलब्ध नहीं है और यह एक बड़े भारी खेदका विषय है, तो भी विद्वानोंके प्रयत्नसे जितना साहित्य प्राप्त हुआ है, उसके द्वारा थोड़ेसे कवियोंका परिचय हम इस लेखके द्वारा हिन्दीके पाठकोंको करा देना चाहते हैं:—

ईसाकी आठवीं, नववीं और दशवीं सदीके कवियोंने जिन प्राचीन जैनकवियोंकी भूरि भूरि प्रशंसा की है, उनमें समन्तभद्र, कविपरमेष्ठी और पूज्यपाद ये तीन मुख्य हैं। पिछले ग्रन्थकारोंने इनकी जिन शब्दोंमें स्तुति की है, उससे मालूम होता है कि ये बहुत ही उच्च श्रेणीके विद्वान् थे और इन्हें लोग बहुत ही पूज्यदृष्टिसे देखते थे।

१. **समन्तभद्र**—इनका जीवनकाल निश्चित नहीं है। 'कर्णाटककविचरित्र' नामक कनड़ी ग्रन्थके रचयिताका अनुमान है कि ये शक संवत् ६० (ईस्वी सन् १३८) के लगभग हो गये हैं, परन्तु महामहोपाध्याय पं० सतीशचन्द्र विद्याभूषण, एम. ए. ने अपने History of the Medæval School of Indian Logic नामक ग्रन्थमें इन्हें ईसाकी छठी शताब्दिका ग्रन्थकर्ता बतलाया है। हरिवंशपुराणमें जिनसेनाचार्यने इनकी स्तुति[१] की है इससे यह तो निश्चय है कि ये जिनसेनस्वामीसे पहले हो गये हैं (जिनसेनने ईस्वी सन् ७८३ में हरिवंशपुराणकी रचना की है।) इनका जन्म कृष्णा, वेणा और भीमा नदियोंके मध्यवर्ती उत्कलिका नामक प्रदेशमें हुआ था। उक्त प्रदेशके मणुवक

---

१ जीवसिद्धिविधायीह कृतयुक्त्यनुशासनम्।
वचः समन्तभद्रस्य वीरस्येव विजृम्भते॥ २९॥ (हरिवंशका प्रथम सर्ग)

नामक ग्राममें इनका बहुत समय तक निवास रहा था। ये बड़े भारी विद्वान् और सच्चरित्र थे। वृद्धावस्थामें इन्हें पांडुरोग तथा भस्मकरोग हो गया था। इन्होंने जैनधर्मका प्रसार करनेके लिए नाना देशोंमें भ्रमण करके अनन्यसाधारण कीर्ति सम्पादन की थी। गन्धहस्तिमहाभाष्य, जीवसिद्धि, युक्त्यनुशासन, बृहत्स्वयंभूस्तवन, जिनशतकालंकार रत्नकरंडश्रावकाचार आदि कई संस्कृत ग्रन्थोंकी इन्होंने रचना की है। सिद्धान्तशास्त्रोंपर भी इन्होंने एक ४८ हजार श्लोक परिमित सरल संस्कृत टीका बनाई है। इनके रत्नकरंडपर कनड़ी भाषाकी एक प्राचीन टीका भी है। परन्तु अभीतक स्वयं इनका बनाया हुआ कोई कनड़ी ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ है।

२. कविपरमेष्ठी—इनका जीवनकाल भी अनिश्चित है। कनड़ीके सुप्रसिद्ध कवि आदिपंपने इनकी बड़ी प्रशंसा की है. आदिपुराणके कर्त्ता जिनसेनने भी इनकी स्तुति की है और इन्हें 'वागर्थसंग्रह' नामक पुराणका कर्ता बतलाया है। 'कविपरमेश्वर' या 'कवीनां परमेश्वरः' भी इनका नामान्तर मालूम पड़ता है। इनके बनाये हुए किसी ग्रन्थके आधारसे जो कि गद्यमय है, जिन-सेनस्वामीने आदिपुराणकी रचना की है।

३. पूज्यपाद यतीन्द्र—चामुंडराय, वृत्तविलास, नेमिचन्द्र और पार्श्व पंडित इत्यादि कनड़ी कवियोंके ग्रन्थोंमें और जिनसेन आदि संस्कृत कवियोंके ग्रन्थोंमें इनकी स्तुति की गई है। देवचन्द्र कविके राजावली नामक ग्रन्थसे और श्रवणबेलगुलके शिलालेखोंसे मालूम होता है कि ये महात्मा कर्णाटकके 'कोलंगाल' नामके ग्राममें एक ब्राह्मण कुलमें शककी चौथी शताब्दिके लगभग उत्पन्न हुए थे। इनके पिताका नाम माधवभट्ट और माताका नाम श्रीदेवी था। अनगार जीवनमें इनका प्रथम नामकरण देवनन्दी हुआ था। पीछे जब इन्हें धर्मके विष-यमें कुछ शंका हुई और उसका समाधान करनेके लिए जब ये जिनेन्द्रदेवके समवसरणमें (विदेह) गये और वहाँ बोधको प्राप्त हुए, तब इन्हें लोग जिने-न्द्रबुद्धि कहने लगे। समवरसरण सभासे लौटकर इन्होंने इतना घोर तपश्चरण किया कि उसके कारण इनके नेत्र चले गये। वनवास देशकी राजधानी बंका-पुरमें उस समय शान्तीश्वर या शांतिनाथका एक सुप्रसिद्ध मन्दिर था। कहते हैं कि पूज्यपाद यतीन्द्रने उक्त मंदिरमें जाकर शांतिस्तोत्रको इस तरह तन्मय होकर पढ़ा कि इनकी दृष्टि फिर पूर्ववत् हो गई। इसके पश्चात् उन्होंने जैन-

धर्मका प्रसार करनेके लिए नाना स्थानोंमें विहार करना और उपदेश देना प्रारंभ किया। उनके उपदेशके प्रभावसे सैकड़ों प्रसिद्ध पुरुष उनके शिष्य हो गये। गंगकुलका दुर्विनीत नामका राजा जिसका शासनकाल ईस्वीसन् ४७८ से ५१३ तक माना जाता है, इनका प्रधान शिष्य था। इनके एक शिष्यका नाम वज्रनन्दी था, जिसने मदुरा वा 'दक्षिणमथुरा' में ४७० ईस्वीमें द्राविड़संघकी स्थापना की थी। कहते हैं कि तपस्या करते समय वनदेवता इनके चरणोंकी पूजा किया करते थे, इस कारण इनका नाम 'पूज्यपाद' पड़ गया था। एक आख्यायिका ऐसी भी प्रसिद्ध है कि इनके पादतीर्थस्पर्शसे लोहा भी सोना हो जाता था। राजावली ग्रन्थमें लिखा है कि मुंडिगुंड नामक ग्रामनिवासी पाणिन्याचार्य इनके मातुल थे। वे अपने व्याकरण ग्रन्थको पूर्ण करनेके पहले ही कालके ग्रास बन गये थे और इनसे उक्त ग्रन्थको पूर्ण करनेका अनुरोध कर गये थे। तदनुसार इन्होंने उसे पूर्ण करके अपने मातुलकी आज्ञाका पालन किया था। इन्होंने पाणिनिसूत्रवृत्ति, जैनेन्द्रव्याकरण, सर्वार्थसिद्धि टीका, शब्दावतार, समाधितंत्र, इष्टोपदेश आदि ग्रन्थोंकी रचना की है। कनड़ी भाषामें भी इन्होंने ग्रन्थोंकी रचना की होगी, परन्तु अभी तक इनका कोई भी कनड़ी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है। ये बड़े भारी निष्णात वैद्य, सुप्रसिद्ध वैयाकरण, प्रतिभाशाली नैयायिक और पूज्य तपस्वी थे।

४. श्रीवर्धदेव—ये 'तुम्बुलूर' नामके ग्राममें उत्पन्न हुए थे, इस कारण इनका एक नाम तुंबुलूराचार्य भी है। इनका जीवनकाल ईसाका सातवाँ शतक है। बहुतसे ग्रन्थकारोंके लेखसे मालूम होता है कि इन्होंने षट्खंड सूत्रोंपर (छठे महाबन्धखंडको छोड़कर) एक 'चूड़ामणि' नामकी टीका–जिसकी श्लोकसंख्या ८४ हज़ार है–रची है परंतु इस समय इनका कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। चामुंडराय, भट्टाकलंक, दंडी आदि महाकवियोंने इनकी स्तुति की है,

---

१ देवसेनसूरिने अपने दर्शनसारमें द्राविड़संघको पांच जैनाभासोंमे गिनाया है और उसका स्थापक वज्रनंदिको ही बतलाया है।

२ पाणिनि व्याकरण बहुत ही प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। इतिहासज्ञोंने उसका समय ईस्वी सन्से कई सौ वर्ष पहले निश्चय किया है। कह नहीं सकते, उसके विषयमें यह आख्यायिका कहां तक सत्य होगी।

जिससे अनुमान होता है कि कनड़ीके समान ये संस्कृत ग्रन्थोंके भी कर्त्ता होंगे। इनकी बनाई हुई एक पंजिका टीका षट्खंड सूत्रोंपर है, जो सात हज़ार श्लोक प्रमाण है।

५. **विमलचन्द्र**—'दिगम्बरजैन-वादिश्रेष्ठ' के नामसे इनकी ख्याति है। ये प्रसिद्ध ग्रन्थकर्त्ता हुए हैं। श्रवणबेलगुलके शिलाशासन नं० ५४ में—जो कि संवत् ११२८ का लिखा हुआ है–इनकी बहुत प्रशंसा की है।

६. **उदय**—यह चोलदेशके राजा **सोमनाथ**का पुत्र था। इसका **उदयादित्य** नामका ग्रंथ सुप्रसिद्ध है। इसका पूरा नाम उदयादित्य था। ईस्वी सन् ११५० के लगभग इसका अस्तित्व माना जाता है। यह जैनधर्मका उपासक था।

७. **नागार्जुन**—वैद्यकशास्त्रके पारंगत और रसायनशास्त्रके अद्वितीय विद्वान् नागार्जुनका नाम बहुत प्रसिद्ध है। ये जैनेन्द्रव्याकरणके कर्त्ता पूज्यपादके भानजे थे। कर्णाटकमें एक किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि इन्होंने अपने रासायनिक प्रयोगोंसे बड़े बड़े पहाड़ोंको सुवर्णमय कर दिया था! यंत्र, मंत्र, तंत्रादिमें इनकी कीर्ति दिगन्तव्यापिनी हो रही थी। शैलशिखरपर इन्होंने मल्लिकार्जुनकी प्रतिष्ठा कराई थी। कहते हैं, जब ये उत्तर भारतमें भ्रमण कर रहे थे, तब दो स्त्रियोंने भुलाकर इनके प्राण ले लिये। इन्होंने नागार्जुनकल्पादि अनेक वैद्यकग्रन्थोंकी रचना की है। नन्दिसूत्र और आवश्यकसूत्रके प्रारंभमें 'नागार्जुनकक्षपुट' नामक वैद्यक ग्रन्थके बनानेवाले नागार्जुनकी बड़ी भारी प्रशंसा और स्तुति की गई है। विद्वानोंका अनुमान है कि वह स्तुति इन्हीं नागार्जुनकी होगी।

८. **जयबन्धुनन्दन**—यह ग्रन्थकर्त्ता ईस्वी सन् ८०० में हुआ है। मद्रासके प्राच्यकोशालयमें इसका बनाया हुआ एक 'सूपशास्त्र' नामका गद्यपद्यमय ग्रन्थ मौजूद है।

९. **दुर्विनीत**—इस नामके राजाने ईस्वी सन् ४७८ से ५१३ तक राज्य किया है। यह गंगनामके राजवंशमें उत्पन्न हुआ था। 'हेब्बूर' के ताम्रलेखमें इसका वृत्तान्त लिखा है। यह पूज्यपाद यतीन्द्रका शिष्य था। कनड़ी ग्रन्थकारोंमें यह बहुत प्रसिद्ध है। इसने महाकवि भारविके 'किरातार्जुनीय काव्यकी' प्रथम सर्गसे लेकर पन्द्रहवें सर्ग तककी कनड़ी टीका बनाई है।

१०. **श्रीविजय**—इस नामका कवि महाराज नृपतुंग या अमोघवर्षके सम-

यमें हुआ है। चन्द्रप्रभपुराण, और चम्पुकाव्य नामक ग्रन्थ इसके बनाये हुए हैं। बहुतसे विद्वानोंका कथन है कि नृपतुंगके ' कविराजमार्ग ' नामक ग्रन्थको भी इसीने बनाया था। दुर्गसिंह, केशिराज और मंगरस आदि विद्वान् कवियोंने इसकी बहुत प्रशंसा की है। श्रवणबेलगुलके शिलाशासनमें भी इसका उल्लेख है।

११. पंडितार्य—ईसाकी १४ वीं शताब्दीमें बुक्करायके समयमें हुए हैं। श्रवणबेलगुलके शिलाशासन नं० ८२ में इनकी ' वाग्मीश्रेष्ठ ' कहकर बड़ी प्रशंसा की है।

१२. नृपतुंग—(समय, ईस्वीसन् ८१४ से ८७७ तक) यह राष्ट्रकूट या राठौर वंशका राजा था। अमोघवर्ष, अतिशयधवल, शर्वदेव आदि इसके नामान्तर हैं। इसकी राजधानी मान्यखेटपुरमें थी, जिसे कि इस समय मलखेड़ कहते हैं। प्रश्नोत्तररत्नमाला संस्कृत और कविराजमार्ग कनड़ी ये दो ग्रन्थ इसके बनाये हुए कहे जाते हैं। कविराजमार्गको कोई कोई श्रीविजयका बनाया हुआ भी बतलाते हैं।

१३. गुणनन्दी—(समय, ईस्वीसन् ९००) ये बलाकपिच्छके शिष्य थे। तर्क व्याकरण और साहित्य शास्त्रके बहुत बड़े विद्वान् थे। इनके ३०० शिष्य थे। आदिपंपके गुरु देवेन्द्र भी इन्हींके एक शिष्य थे। अनेक ग्रन्थकारोंने इन्हें कई काव्योंका रचयिता बतलाया है; परन्तु अभी तक इनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है। श्रवणबेलगुलके ४२–४३ और ४७ नम्बरके शिलालेखोंमें इनका उल्लेख मिलता है।

१४. आदि पंप—इसका जन्म ईस्वी सन् ९०२ में ब्राह्मणकुलमें हुआ था। पिताका नाम अभिरामदेवराय था, जो पहले वेदानुयायी था, परन्तु पीछे जैनधर्मका उपासक हो गया था। यह पुलिगेरीके चालुक्य राजा अरिकेसरीका दरबारी कवि और सेनापति था। कनड़ी भाषाका यह श्रेष्ठ कवि समझा जाता है। इसके बनाये हुए दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, एक आदिपुराण और दूसरा भारत चम्पू। आदिपुराणमें ऋषभदेवकी और भारतमें महाभारतकी कथा वर्णित है। इसने भारतमें अपने आश्रय देनेवाले राजा अरिकेसरीका अर्जुनके साथ जो साम्य दिखलाया है,

---

१ जैनहितैषीके भाग ८ अंक २ में इनके विषयमें एक विस्तृत लेख प्रकाशित हो चुका है।

वह बड़ा ही पांडित्यपूर्ण है। इसने भारतको छह महीनेमें और आदिपुराणको तीन महीनेमें रचकर पूर्ण किया था। उस समय इसकी अवस्था ३९ वर्षकी थी। पंपकविका आदिपुराण गद्यपद्यमय (चम्पू) है। कनड़ीमे काव्य रचनाका यह लक्ष्य ग्रन्थ है। इसमें १६ परिच्छेद हैं। कर्नाटककविचरित्रके कर्त्ताका कथन है कि " इसका गद्य ललित, हृदयंगम, गंभीराशय और भावपूर्ण है और पद्य तो मोतीकी लड़ियोंके समान है। भाषाशैली सर्वोत्कृष्ट है। इस कविको कन्नड कवियोंका राजा कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। " इस ग्रन्थके आदिमें समन्तभद्र, कविपरमेष्ठी, पूज्यपाद, गृद्धपिच्छाचार्य, जटाचार्य, श्रुतकीर्ति, मलधारि सिद्धान्तमुनीश्वर, देवेन्द्रमुनि, जयनंदिमुनि और अकलंकदेवकी स्तुति की गई है। इसका भारत अथवा विक्रमार्जुनविजय भी कनड़ी साहित्यमें अपनी शानी नहीं रखता। यह भी चम्पू ग्रन्थ है। इसमें १४ आश्वास हैं और पांडवोंके जन्मसे लेकर कौरवोंके वध तककी कथा है। अन्तमें राज्याभिषेक हो चुकनेपर ग्रन्थ समाप्त किया गया है। इस ग्रन्थकी रचनासे प्रसन्न होकर अरिकेसरीने कविको ' बच्चेसासिर ' प्रान्तका एक धर्मपुर नामक ग्राम पुरस्कारमें दिया था। पंपके गुरुका नाम देवेन्द्रमुनि था। वे बड़े भारी विद्वान् थे। श्रवणवेलगुलके ४२ वें शिलालेखमें उनका ' भारतीभालपट्ट ' कहकर उल्लेख किया है। कवितागुणार्णव, पुराणकवि, सुकविजनमनोमानसोत्तंसहंस, सरस्वतीमणिहार, संसारसारोदय आदि पंपकविके उपनाम थे, जिनसे उसके एक अद्वितीय कवि होनेका अनुमान किया जा सकता है।

१५. पोन्न—यह भी कनड़ी भाषाका एक अतिशय प्रसिद्ध कवि है। पोन्निग, पोन्नमय्य, सवण, आदि इसके नामान्तर हैं और कविचक्रवर्ती, उभयकविचक्रवर्ती सर्वदेवकवीन्द्र, सौजन्यकुन्दांकुर आदि इसकी पदवियाँ हैं। इसके गुरुका नाम इन्द्रनन्दि था। यह राष्ट्रकूटवंशीय राजा कृष्णराजके समयमें (ईस्वी सन् ९५०) हुआ है। कृष्णराजने इसे ' उभयकविचक्रवर्ती ' का सम्मानसूचक पद दिया था, ऐसा जन्नकविके यशोधर चरित्रसे—जो कि ईस्वी सन् १२०९ में बना है—मालूम होता है। दुर्गसिंह (सन ११४५) के एक पद्यसे भी इस बातकी साक्षी मिलती है। इसके बनाये हुए शान्तिपुराण और जिनाक्षरमाला नामक दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं। शान्तिपुराण चम्पूरूप काव्य है। इसके १२ आश्वास हैं। इस

ग्रन्थको कविपुराणचूडामणि भी कहते हैं। इसकी कविता बहुत ही सुन्दर है। बेंगी देशके कम्मेनाडिकापुंगनूर नामक ग्रामके रहनेवाले कौंडिन्यगोत्रोद्भव नागमय्य नामक जैन ब्राह्मणके मल्लप और पुन्निमय्येन--जो कि पीछे तैलिपदेवके सेनापति हो गये थे--अपने गुरु जिनचन्द्रदेवके प्रति परोक्षविनय प्रगट करनेके लिए कवि पौन्नसे शान्तिनाथपुराणके रचनेका अनुरोध किया था, ऐसा ग्रन्थकी प्रशस्तिसे विदित होता है। जिनाक्षरमाला छोटीसी स्तवनात्मक कविता है, जो वर्णानुक्रमसे बनाई गई है। शान्तिनाथपुराणके अन्तके एक पद्यसे मालूम होता है कि इस कविके बनाये हुए दो ग्रन्थ और हैं--एक रामकथा या भुवनैकरामाभ्युदय और दूसरा गतप्रत्यागतवाद। दूसरा ग्रन्थ संस्कृतमें है। कोई कोई विद्वान् इनका बनाया हुआ एक अलंकारका ग्रन्थ और भी बतलाते हैं। परन्तु इस समय ये तीनों ही ग्रन्थ प्राप्त नहीं हैं। अजितपुराणके एक पद्यसे मालूम होता है कि, पंप, पौन्न और रन्न ये तीन कवि कनड़ी साहित्यके रत्नत्रय हैं। पौन्नकी पार्श्वपंडित (ईस्वी सन् १२०६), नयसेन (१११२) नागवर्म (११४५), रुद्रभट्ट (११८०) केशिराज (१२६०) मधुर (१३८०) आदि जैन और जैनेतर कवियोंने बहुत प्रशंसा की है। केशिराज आदि लक्षणग्रन्थकर्त्ताओंने इसके ग्रन्थोंसे उदाहरण उद्धृत किये हैं।

१६. रन्न—यह कवि वैश्य वर्णका था। इसके पिताका नाम जिनवल्लभेन्द्र और माताका अब्बलब्बे था। इसका जन्म ईस्वी सन् ९४९ में मुदुबोल नामक ग्राममें हुआ था। कविरत्न, कविचक्रवर्ती, कविकुंजरांकुश, उभयभाषाकवि आदि इसकी पदवियाँ थीं। यह राजमान्य कवि था। राजाकी ओरसे सुवर्णदंड, चँवर, छत्र, हाथी आदि इसके साथ चलते थे। इसके गुरुका नाम अजितसेनाचार्य था। सुप्रसिद्ध जैन मंत्री चामुंडराय इसके पोषक थे। इस समय इसके दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, एक अजितपुराण और दूसरा साहसभीमविजय या गदायुद्ध। पहले ग्रन्थमें दूसरे तीर्थंकर अजितनाथका चरित्र १२ आश्वासोंमें वर्णन किया है। यह चम्पू ग्रन्थ है। इसे काव्यरत्न और पुराणतिलक भी कहते हैं। यह शक संवत् ९१५ (ई० सन् ९९३) में रचा गया था। इस ग्रन्थके विषयमें कवि कहता है कि जिस तरह इस ग्रन्थसे रन्न (अर्थात् मैं) 'वैश्यवंशध्वज' कहलाया, उसी तरह आदिपुराणके कारण पंप 'ब्राह्मणवंशध्वज' कहलाया था। तैलिपदेव (९७३-९९७) के मल्लप और पुण्यमय्य नामके दो सेनापति थे। इनमेंसे

पुण्यमय्य तो अपने शत्रु गोविन्दके साथ लड़कर काबेरी नदीके तटपर मारा गया। मल्लप तैलिपदेवके मरनेके बाद आहवमल्लके राजा होनेपर (इ० स० ९९७ से १००८) मुख्याधिकारी हुआ। इसकी एक अत्तिमब्बे नामकी सुन्दर कन्या थी। उसका ब्याह चालुक्यचक्रवर्तीके महामंत्री दल्लिपके पुत्र नागदेवके साथ हुआ। नागदेव बालकपनसे ही बड़ा साहसी और पराक्रमी हुआ। इसलिए चालुक्यनरेश आहवमल्लने प्रसन्न होकर इसे अपना प्रधान सेनापति बनाया। यह अनेक युद्धोंमें प्रबलपराक्रम दिखला कर विजयी हुआ और अन्तको मारा गया। इसकी छोटी स्त्री गुंडमब्बे तो इसके साथ सती हो गई, परन्तु अत्तिमब्बे अपने पुत्र अन्नगदेवकी रक्षा करती हुई व्रतनिष्ठ होकर रहने लगी। जैनधर्मपर इसको अगाध श्रद्धा थी। इसने सुवर्णमय और रत्नजटित एक हजार जिनप्रतिमायें बनवाकर स्थापित कीं और लाखों रुपयोंका दान किया। दानमें यह इतनी प्रसिद्ध हुई कि लोग इसे 'दानचिन्तामणि' कहते हैं। इसी दानशीला स्त्रीरत्नके संतोषके लिए रन्नने अजितपुराणकी रचना की थी, ऐसा ग्रन्थकी प्रशस्तिसे पता लगता है। दूसरा ग्रन्थ साहसभीमविजय अथवा गदायुद्ध १० आश्वासका है। यह भी गद्य-पद्यमय है। इसमें महाभारत कथाका सिंहावलोकन करके चालुक्यनरेश आहवमल्लका चरित्र लिखा है। अपने पोषक आहवमल्लदेवका भीमसेनसे मिलान किया है। बड़ा ही विलक्षण ग्रन्थ है। कर्णाटक कविचरित्रके लेखक इस कविके विषयमें लिखते हैं कि "रन्नकविके ग्रन्थ सरस और प्रौढ रचनायुक्त हैं। उसकी पदसामग्री, रचनाशक्ति और बन्धगौरव आश्चर्यजनक है। पद्य प्रवाहरूप और हृदयग्राही है। साहसभीमविजयको पढ़ना शुरू करके फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता है।" इस कविकी अभिनवपंप, नयसेन, पार्श्व, मधूर, मंगरस, आदि कवियोंने बहुत प्रशंसा की है।

एक "रन्नकन्द" नामका छोटासा कविता ग्रन्थ भी इस कविका बनाया हुआ है।

१७. चामुंडराय—ये गंगकुलचूडामणि जगदेकवीर नोलंबकुलान्तक आदि अनेक पदोंको धारण करनेवाले महाराजा राचमल्लके मंत्री और सेनापति थे। ब्रह्मक्षत्रिय कुलमें शक संवत् ९०० (ईस्वीसन् ९७८) में इनका जन्म हुआ था। श्रवणबेलगुलकी सुप्रसिद्ध बाहुबलि या गोम्मटस्वामीकी प्रतिमा इन्होंने अपरिमित द्रव्य व्यय करके प्रतिष्ठित कराई थी। ये बड़े उदार थे। इनकी

उदारतासे प्रसन्न होकर राचमल्लने इन्हें 'राय' की पदवी प्रदान की थी। इनका एक नाम अण्ण भी है। ये बड़े शूर और पराक्रमी थे। गोविन्दराज, बेंकोंडुराज आदि अनेक राजाओंको इन्होंने पराजित किया था, इसलिए इन्हें समरधुरन्धर, वीरमार्तण्ड, रणरंगसिंह, वैरिकुलकालदण्ड, सगरपरशुराम, प्रतिपक्षराक्षस आदि अनेक उपनाम प्राप्त हुए थे। जैनधर्मके ये अन्यतम श्रद्धालु थे, इसलिए जैनविद्वानोंने इन्हें सम्यक्त्व रत्नाकर, शौचाभरण, सत्ययुधिष्ठिर आदि अनेक प्रशंसावाचक पद दिये थे। महाराजा राचमल्ल और ये दोनों ही अजितसेनाचार्यके शिष्य थे। आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीने सुप्रसिद्ध गोम्मटसार ग्रन्थकी रचना इन्हींकी प्रेरणासे की थी। इनका बनाया हुआ प्रसिद्ध ग्रन्थ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण या चामुण्डरायपुराण है। इसमें चौवीसों तीर्थकरोंका चरित्र है। इसके प्रारंभमें लिखा है कि, इस चरित्रको पहिले कूचिभट्टारक, तदनन्तर नन्दिमुनीश्वर, तत्पश्चात् कविपरमेश्वर और तत्पश्चात् **जिनसेन गुणभद्र** स्वामी, इस प्रकार परम्परासे कहते आये हैं, और उन्हींके अनुसार मैं भी कहता हूँ। मंगलाचरणमें गृद्धपिच्छाचार्यसे लेकर अजितसेन पर्यन्त आचार्योंकी स्तुति की है और अन्तमें श्रुतकेवली, दशपूर्वधर, एकादशांगधर, आचारांगधर, पूर्वांगदेशधरके नाम कहकर अर्हद्बलि, माघनन्दि, भूतबलि, पुष्पदन्त, श्यामकुण्डाचार्य, तुम्बुलूराचार्य, समन्तभद्र, शुभनन्दि, रविनन्दि, एलाचार्य, वीरसेन, जिनसेनादिका उल्लेख किया है और फिर अपने गुरुकी स्तुति की है। यह पुराण प्रायः गद्यमय है। पद्य बहुत ही कम है। कनड़ीके उपलब्ध गद्यग्रन्थोंमें चामुण्डरायपुराण ही सबसे पुराना गिना जाता है। गोम्मटसारकी प्रसिद्ध कनड़ी टीका (कर्नाटकवृत्ति) भी चामुंडरायहीकी बनाई हुई है, जिसपरसे केशववर्णिने संस्कृत टीका बनाई है। इससे मालूम होता है कि, चामुंडराय केवल शूरवीर राजनीतिज्ञ और कवि ही नहीं थे, किन्तु जैनसिद्धान्तके भी बड़े भारी पण्डित थे।

१८. नागवर्म—इस नामके दो कवि हो गये हैं—एक तो छन्दोम्बुधि और कादम्बरीका रचयिता और दूसरा काव्यावलोकन, वस्तुकोश, कर्नाटकभाषाभूषणादि ग्रन्थोंका कर्त्ता। पहला नागवर्म वेंगी देशके वेंगीपुर नगरके रहनेवाले वेन्नामय्य ब्राह्मण (कौंडिन्यगोत्र) का पुत्र था। इसकी माताका नाम पोलकब्बे था।

नाकी और सव्यडीयात ये दो इसके नामान्तर थे । यह अपने गुरुका नाम अजितसेनाचार्य बतलाता है । रक्कसगंगराज जिसने कि ईस्वी सन् ९८४ से ९९९ तक राज्य किया है और जो गंगवंशीय महाराज राचमल्लका भाई था, इसका पोषक राजा था । चामुंडरायकी भी इसपर कृपा रहती थी । कवि होकर भी यह बड़ा वीर और युद्धविद्यामें चतुर था । कनड़ीमें इस समय छन्दशास्त्रके जितने ग्रन्थ प्राप्य हैं, उनमें इसका छन्दोम्बुधि सबसे प्राचीन गिना जाता है । यह इसने अपनी स्त्रीको उद्देश्य करके लिखा है । इसका दूसरा ग्रन्थ बाणभट्टके सुप्रसिद्ध गद्यग्रन्थ कादम्बरीका सुन्दर गद्यपद्यमय अनुवाद है । यह कवि अपने गुरु तो अजितसेनाचार्यको बतलाता है, परन्तु ग्रन्थोंके मंगलाचरणमें न जाने क्यों शिव आदिकी स्तुति करता है ।

१९ दूसरा नागवर्म—चालुक्यवंशी, जगदेकमल्ल (११३९–११४९) के समयमें हुआ है । यह जातिका ब्राह्मण था । इसके पिताका नाम दामोदर था । यह चालुक्यनरेश जगदेकमल्लका सेनापति और जन्न कविका गुरु था । कनड़ी साहित्यमें इसकी ' कवितागुणोदय ' के नामसे ख्याति है । अभिनव शर्ववर्म, कविकर्णपूर और कविताागुणोदय ये उसकी उपाधियाँ थीं । वाणिवल्लभ, जन्न, साल्व आदि कवियोंने इसकी स्तुति की है । इसके बनाये हुए काव्यावलोकन, कर्णाटकभाषाभूषण, और वस्तुकोश नामके तीन ग्रन्थ हैं । इसमें पांच अध्याय हैं । पहले भागमें कनड़ीका व्याकरण है । नृपतुंग (अमोघवर्ष) के अलंकारशास्त्रकी अपेक्षा यह विस्तृत है । कर्णाटकभाषाभूषण संस्कृतमें भाषाका उत्कृष्ट व्याकरण है । मूलसूत्र और वृत्ति संस्कृतमें है और उदाहरण कनड़ीमें । उपलब्ध कनड़ी व्याकरणोंमें—जो कि संस्कृतसूत्रोंमें हैं—यह सबसे पहला और उत्तम व्याकरण है । इसीको आदर्श मानकर सन् १६०४ में भट्टाकलंक (द्वितीय) ने कनड़ीका शब्दानुशासन नामका विशाल व्याकरण संस्कृतमें बनाया है । (यह व्याकरण मैसूर सरकारकी ओरसे छप चुका है ।) वस्तुकोश कनड़ीमें प्रयुक्त होनेवाले संस्कृत शब्दोंका अर्थ बतलानेवाला पद्यमय निघण्टु या कोश है । वररुचि-हलायुध, सास्वत, अमरसिंह आदिके ग्रन्थ देखकर इसकी रचना की गई है ।

२० गुणवर्म—इस नामके, दो जैनकवि हो गये हैं, एक हरिवंशपुराणका कर्त्ता और दूसरा पुष्पदन्तपुराणका कर्त्ता । पहला गुणवर्म ईस्वी सन् १०५० के

लगभग हुआ है। अभिनव विद्यानंदिने अपने काव्यसार नामके ग्रन्थमें गुणवर्माके शूद्रकनामक ग्रन्थके कुछ पद्य उद्धृत किये हैं, जिससे मालूम होता है कि,उसने कोई शूद्रक नामक ग्रन्थ भी रचा था, जो अभी तक कहीं देखनमें नहीं आया। इस ग्रन्थमें किसी गंग नामके राजाका जिसके कि गंगार्जुन, गंगच-क्रायुधांक, रूपकन्दर्प आदि नामान्तर या विशेषण थे—चरित्र और स्तवन है। नागवर्म कविने गुणवर्मको 'लक्षणग्रन्थकर्ता' बतलाया है। इससे इसका बनाया हुआ कोई व्याकरणग्रन्थ भी होना चाहिए। इसके पीछेके नागवर्म, नयसेन, रुद्रभट्ट आदि कवियोंने अपने ग्रन्थोंमें गुणवर्मके कविताचातुर्यकी बहुत प्रशंसा की है, जिससे मालूम होता है कि यह एक सुप्रसिद्ध कवि हो गया है। दूसरे गुणवर्मका समय ईस्वी सन् १२३५ के लगभग निश्चित हुआ है।

२१. गजांकुश—मल्लिकार्जुन, नयसेन आदि कवियोंके पद्योंसे विदित होता है कि गज अथवा गजांकुश नामक एक जैनकवि ईस्वी सन् ११९० के पहले हो गया है। दुर्गसिंहने इसका 'विजितारिदंड नायक' कह कर उल्लेख किया है जिससे मालूम होता है कि यह कवि होनेपर भी एक शूर सेनापति था। इसका एक नाम गजग भी था। रुद्रभट्ट, अंडय्य, काशिराज, कुमुदेन्दु, वाणिवल्लभ आदि कवियोंने इसकी स्तुति की है, परन्तु इसका अभी तक कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है।

२२. कविमल्ल—राजेन्द्रचूडके राज्य कालमें (ईस्वी सन् १०५७) जो अठारहवाँ शिलाशासन लिखा गया है और जो हेग्गडदेवके कोटि नामक स्थानमें है, उससे ऐसा मालूम होता है कि, नुगुनाडके अधिपति चौलनरेशकी देकब्बे नामकी लड़की थी। यह नबिलेनाडके स्वामी एचनको व्याही थी। इस एचनने अपने दामादोंको मार डाला इस अपराधमें उसका सार्वभौम नरेशकी आज्ञासे शिरच्छेद किया गया। देकब्बे अपने पतिके इस विरहको सहन न कर सकी, इसलिए उसके साथ ही सती हो गई— चितामें जल गई। इस पतिव्रताके स्मर-णार्थ जो शिलालेख लिखा गया है, उसके पद्य बहुत ही भावपूर्ण और सुन्दर हैं। कविमल्ल इसी लेखका रचयिता है और इससे वह एक उत्तम कवि मालूम होता है। उसका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ प्राप्य नहीं है।

२३ नागवर्माचार्य—यह उदयादित्य राजाका 'सेनानायक' और 'सन्धिवैग्राहिक मंत्री' था। यह ईस्वी सन् १०७० के लगभग हुआ है।

यह बड़ा धर्मात्मा और परमार्थी था । बलिपुर नामके स्थानमें इसने बहुतसे मन्दिर बनवाये थे और भुत्तरेडे नामके स्थानमें सिद्धतीर्थ स्थापित किया था । अपने भास्करादि भाइयोंको उद्देश करके इसने एक चन्द्रचूड़ामणि शतक नामक ग्रन्थकी रचना की थी । इस ग्रन्थका दूसरा नाम ज्ञानसार भी है । इसमें वैराग्यको जागृत करनेवाले बहुत ही सुन्दर पद्य हैं ।

२४. दामराज—सार्वभौम त्रिभुवनमल्ल नरेश (राज्यकाल ई० सन् १०७६ से ११२६) का गंगपेरमानडीदेव नामक सामन्त राजा था । और उसका नोक्कय हेग्गडे नामका मंत्री था । पहले यह कवि इसी मंत्रीका आश्रित था । परन्तु शिवमोग्ग तहसीलमें जो दशवाँ शिलालेख है, उसमें इसने अपनेको ' सान्धिवैग्रहिक मंत्री ' लिखा है । इससे मालूम होता है कि पीछेसे इसने उक्त पद पा लिया होगा । गंगपेरमानडीदेवने बहुतसे जिनमन्दिरोंको ग्रामादि दान किये थे, और उनके शासन दामराजसे लिखवाये थे । उक्त शासन लेखोंके पद्योंसे यह बात निःसंकोच कही जा सकती है कि वह एक उच्च श्रेणीका कवि था । मालूम नहीं, इस कविने किसी स्वतंत्र ग्रन्थकी भी रचना की है, या नहीं । इसका समय ईस्वी सन् १०८५के लगभग मालूम होता है ।

२५. शंखवर्म—इसकी ' अलंकारशास्त्रकार ' के नामसे ख्याति है । परन्तु इसका कोई ग्रन्थ अब तक उपलब्ध नहीं हुआ । द्वितीय नागवर्मने अपने काव्यावलोकन ग्रन्थमें इसकी प्रशंसा की है। रुद्रभट्टने भी इसकी स्तुति की है ।

२६. नागचन्द्र—इसका दूसरा नाम अभिनवपंप है । कनड़ीका यह वैसा ही कवि समझा जाता है, जैसे हिन्दीके तुलसीदास । कर्णाटक प्रान्तमें नागचन्द्रकी रामायण या पंपरामायणका प्रचार है । यह ग्रन्थ ऐसा सुन्दर और सरस है कि इसे प्रत्येक धर्मका अनुयायी पढ़ता है । कोई इस बातका ख़याल नहीं करता है कि इसकी कथा जैनधर्मके अनुसार है । यह ग्रन्थ गद्यपद्यमय है । इसमें छह आश्वास हैं । इस कविका दूसरा ग्रन्थ मल्लिनाथपुराण है, जिसमें १९ वें तीर्थंकर मल्लिनाथका चरित्र १४ आश्वासोंमें वर्णित है । यह भी गद्यपद्यमय है । इसकी वर्णनशैली बड़ी ही हृदयग्राहिणी है । जिनमुनितनय और जिनाक्षरमाला ये दो ग्रन्थ भी इसी कविके बनाये हुए प्रसिद्ध हैं । परन्तु हमको इस विषयमें संदेह है । क्योंकि इन ग्रन्थोंकी रचना बहुत ही साधी और महत्त्वहीन है । यह कवि ईस्वी सन् ११०५ के लगभग हुआ है । भारतीकर्णपूर, कवितामनोहर, साहित्यविद्या-

धर, साहित्यसवज्ञ, सूक्तिमुक्तावतंस, आदि इस कविके उपनाम थे । यह जैसा विद्वान् था, वैसा ही धनवान् भी था । मल्लिनाथपुराणकी प्रशस्तिसे ज्ञात होता है कि इसने बीजापुरमें विपुल धन लगाकर मल्लिनाथ भगवान्का एक विशाल मन्दिर बनवाया था और उसी समय मल्लिनाथपुराणकी रचना की थी । इसका निवासस्थान बीजापुर ही जान पड़ता है । इसके गुरुका नाम बालचन्द्र मुनि था । बालचन्द्र नामके दो मुनि हो गये हैं, जिनमेंसे एक पुस्तकगच्छभुक्त नयकीर्तिके शिष्य थे और प्राकृत ग्रन्थोंके टीकाकार (कनड़ी) होनेसे ' आध्यात्मिक बालचन्द्र ' कहलाते हैं । ये सन् ११९२ तक जीवित थे । दूसरे बालचन्द्र वक्रगच्छके थे और वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीके गुरु मेघचन्द्र (पूज्यपादकृत समाधिशतकके टीकाकार) के सहाध्यायी थे । यही दूसरे बालचन्द्रके गुरु थे । नागचन्द्र नामके एक और विद्वान् हो गये हैं, परन्तु वे गृहस्थ नहीं मुनि थे । तत्त्वानुशासन, लब्धिसार टीका और विषापहार टीका आदि कई संस्कृत ग्रन्थ उनके बनाये हुए हैं ।

२७. कन्ति—यह स्त्रीकवि थी और इसकी कविता बहुत ही मनोहारिणी होती थी । कनड़ी साहित्यमें शायद इसके पहले और कोई स्त्रीकवि नहीं हुई । देवचंद्र कविके एक लेखसे मालूम होता है कि यह छन्द, अलंकार, काव्य, कोश, व्याकरणादि नाना ग्रन्थोंमें कुशल थी । बाहूबलि नामक कविने अपने नागकुमारचरितके एक पद्यमें इसकी बहुत प्रशंसा की है और इसे ' अभिनववाग्देवी ' विशेषण दिया है । द्वारसमुद्रके बल्लालराजा विष्णुवर्धनकी सभामें अभिनव पंप और कन्तिसे विवाद हुआ था । अभिनवपंपकी दी हुई समस्याकी उसने पूर्ति की थी । अभिनवपंप चाहता था कि कन्ति मेरी प्रशंसा करे—उसकी की हुई प्रशंसाको वह अपने गौरवका कारण समझता था । परन्तु कन्ति पंपकी प्रशंसा नहीं करती थी । कहते हैं कि कन्तिने अन्तमें पंपकी कविताकी प्रशंसा करके उसको सन्तुष्ट कर दिया था—परन्तु सहज ही नहीं । पंपको इसके लिए एक ढोंग बनाना पड़ा था । यह राजमंत्रीके धर्मचन्द्र नामक पुत्रकी लड़की थी। इसका समय पंपके समयके लगभग समझना चाहिए । इस समय इसका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है ।

२८. नयसेन—यह कवि ईस्वी सन् १११२ के लगभग मुळगुन्द नामक तीर्थस्थानमें हुआ है । यह त्रैविद्यचक्रवर्ती नरेन्द्रसेनसूरिका शिष्य था । नरेन्द्रसेन बहुत प्रभावशाली विद्वान् हुए हैं । चालुक्यवंशीय भुवनैकमल्ल (सन् १०६९

से १०७६) उनकी सेवा करते थे। नयसेनके बनाये हुए दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, एक तो कर्णाटक भाषाका व्याकरण और दूसरा धर्मामृत। धर्मामृतको काव्यरत्न भी कहते हैं। इसमें १४ आश्वास हैं। इसकी कनड़ी भाषा बहुत ही मधुर, ललित तथा शुद्ध है। नीति ग्रन्थोंकी पद्धतिसे इसमें श्रावकाचारका विस्तृत स्वरूप कहा है। इस कविकी भी कनड़ीके नामी कवियोंमें गणना है। इसके पीछेके कवियोंने इसे 'सुकविनिकरपिकमाकन्द सुकविजनमनःसरोराजहंस' आदि विशेषणोंसे भूषित किया है।

२९. राजादित्य—इस्वी सन् ११२० के लगभग इस कविके अस्तित्वका पता लगता है। राजवर्म, भास्कर और वाचिराज इसके नामान्तर हैं। पद्यविद्याधर इसका उपनाम था इसके पिताका नाम श्रीपति और माताका वसन्ता था। कोंडि मंडलके 'पूविन बाग' में इसका जन्म हुआ था। यह विष्णुवर्धन राजाकी सभा ा प्रधान पंडित था। विष्णुवर्धनने ईस्वी सन् ११०४ से ११४१ तक राज्य किया है। कवि के समक्ष उसका राज्याभिषेक हुआ था। अपने आश्रयदाता राजाकी इसने एक पद्यमें बहुत प्रशंसा की है और उसको सत्यवक्ता, परहितचरित, सुस्थिर, भोगी, गंभीर, उदार, सच्चरित्र अखिलविद्यावित् और भव्यसेव्य बतलाया है। यह कवि गणितशास्त्रका बड़ा भारी विद्वान् हुआ है। कर्णाटककवि-चरित्रके लेखकका कथन है कि कनड़ी साहित्यमें गणितका ग्रन्थ लिखनेवाला यह सबसे पहला विद्वान् था। इसके बनाये हुए व्यवहारगणित, क्षेत्रगणित, व्यवहाररत्न, जैनगणितसूत्रटीकोदाहरण, चित्रहसुगे और लीलावती ये गणितग्रन्थ प्राप्य हैं। ये सब ग्रन्थ प्रायः गद्यपद्यमय हैं। इसका व्यवहारगणित नामक ग्रन्थ बहुत ही अच्छा है। इसमें गणितके त्रैराशिक, पंचराशिक, सप्तराशिक, नवराशिक, चक्र-वृद्धि आदि संपूर्ण विषय हैं और वे इतनी सुगम पद्धतिसे बतलाये गये हैं कि गणित जैसा कठिन और नीरस विषय भी सहज और सरस हो गया है। कविने अपनी विलक्षण प्रतिभासे इस ग्रन्थको केवल पाँच ही दिनमें बनाकर तयार किया था, ऐसा इसके एक पद्यसे प्रतीत होता है। यद्यपि इस कविका कोई काव्य-ग्रन्थ नहीं मिलता है, तो भी उक्त ग्रन्थोंके पद्य देखकर विश्वास होता है कि यह कवि भी अच्छा था। व्यवहारगणितके प्रत्येक अध्यायके अन्तमें इसने इस प्रकार थोड़ासा गद्य दिया है,—

" इति श्रीशुभचन्द्रदेवयोगीन्द्रपादारविन्दमत्तमधुकरायमानमानसानन्दितसकलगणिततत्त्वविलासे विनेयजननुते श्रीराज्यादित्यविरचिते व्यवहारगणिते–इत्यादि " इससे मालूम होता है कि कविके गुरुका नाम श्रीशुभचन्द्रदेव था और ये संभवतः वे ही शुभचन्द्र हैं जिनका वर्णन श्रवणबेलगुलके ४३ वें शिलालेखमें आया है और जिनकी मृत्यु ईस्वी सन् ११२३ में बतलाई गई है।

३०. कीर्तिवर्मा—ईस्वी सन् ११२५ में इस कविके आस्तित्वका पता लगता है। यह चालुक्यवंशीय (सोलंकी) महाराज त्रैलोक्यमल्लका पुत्र था। त्रैलोक्यमल्लने १०४४ से १०६८ तक राज्य किया है। इसके चार पुत्र थे–विक्रमांकदेव (१०७६ से ११२६), जयसिंह, विष्णुवर्धन–विजयादित्य और कीर्तिवर्मा। कीर्तिवर्मा त्रैलोक्यमल्लकी जैनधर्म धारण करनेवाली केतलदेवी रानीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। केतलदेवीने सैकड़ों जैनमन्दिर बनवाये थे और जैनधर्मकी प्रभावनाके लिए अनेक कार्य किये थे। उसके बनवाये हुए मन्दिरोंके खंडहर और उनके शिलालेख अब भी कर्नाटक प्रान्तमें उसके नामका स्मरण कराते हैं। कीर्तिवर्माके बनाये हुए ग्रन्थोंमेंसे इस समय केवल एक 'गोवैद्य' नामक ग्रन्थ प्राप्य है। इसमें पशुओंके विविध रोगोंका और उनकी चिकित्साका विस्तारपूर्वक वर्णन है। इससे जान पड़ता है कि वह केवल कवि ही नहीं, वैद्य भी था। गोवैद्यके एक पद्यमें उसने आपको कीर्तिचन्द्र, वैरिकरिहरि, कन्दर्पमूर्ति, सम्यक्त्वरत्नाकर, बुधभव्यबान्धव, वैद्यरत्नपालभवन्ध (?), कविताब्धिचन्द्र, कीर्तिविलास आदि विशेषण दिये हैं। वैरिकरिहरि विशेषणसे बोध होता है कि वह बड़ा भारी वीर तथा योद्धा भी था। उसने अपने गुरुका नाम देवचन्द्र मुनि बतलाया है। श्रवणबेलगुलके ४० वें शिलालेखमें राघवपाण्डवीय काव्यके कर्त्ता श्रुतकीर्ति त्रैविद्यके समकालीन जिन देवचन्द्रकी स्तुति की है, हमारी समझमें वे ही कीर्तिवर्माके गुरु होंगे।

३१. ब्रह्मशिव—यह ईस्वी सन् ११२५ के लगभग हुआ है। कीर्तिवर्मा और आहवमल्ल नरेशका यह समकालीन था। यह वत्सगोत्री ब्राह्मण था। इसके पिताका नाम अग्गलदेव था। पहले यह वैदिक मतका अनुयायी था और फिर उसे निःसार समझकर लिंगायत मतका उपासक हो गया था। इस समय तक वह वेद स्मृति पुराण आदि नाना ग्रन्थोंका अध्ययन कर चुका था। परन्तु उसे इन ग्रन्थोंसे कुछ संतोष नहीं हुआ। लिंगा-

यत मतको भी उसने यथार्थ नहीं समझा और निदान उसने स्याद्वादानुयायी जैनधर्मको ग्रहण करके अपने आत्माको सन्तुष्ट वा शान्त किया । इसका बनाया हुआ एक समयपरीक्षा नामका ग्रन्थ मिलता है, जिसमें शैव वैष्णवादि मतोंके पुराणग्रन्थों तथा आचारोंमें दोष बतलाके जैनधर्मकी प्रशंसा की है । इस ग्रन्थकी कविता बहुत ही सरल और ललित है । कनड़ी भाषाका यह महाकवि समझा जाता है । समयपरीक्षासे ऐसा मालूम होता है संस्कृतका भी यह अच्छा विद्वान् था । निम्नलिखित गद्यसे मालूम होता है कि इसके गुरु श्रीवीरनन्दि मुनि थे:—

"इति भगवदर्हतपरमेश्वरचरणस्मरणपरिणतान्तःकरणवीरनन्दिमुनीन्द्रचरणसरसीरुह-षट्चरण—मिथ्यासमयतीव्रतिमिरचण्डकिरण—सकलागमनिपुण—महाकविब्रह्मशिवविरचितसमयपरीक्षायां—"

ये वीरनन्दि चन्द्रप्रभकाव्यके कर्त्ता नहीं, किन्तु दूसरे मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवके पुत्र होंगे जिनकी कि मृत्यु ईस्वी सन् १११५ में हुई थी, ऐसा अनुमान होता है ।

३२. कर्णपार्य—समय ईस्वी सन् ११४०। इसके कण्णप, कर्णप, कण्णमय कण्णमय्य, आदि नामान्तर हैं। ये नाम इसके ग्रन्थोंमें जगह जगह पाये जाते हैं। 'किलेकल' दुर्गके स्वामी गोवर्धन या गोपन राजाके विजयादित्य, लक्ष्मण या लक्ष्मीधर, वर्धमान और शान्ति नामके चार पुत्र थे। कवि इनमेंसे लक्ष्मीधरका आश्रित कवि था। इस कविके बनाये हुए नेमिनाथपुराण, वीरेशचरित और मालतमिाधव नामक तीन ग्रन्थ कहे जाते हैं, परन्तु इस समय केवल एक नेमिनाथपुराण ही उपलब्ध है। इसमें २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथका चरित है। ग्रन्थ चम्पूरूप है और उसमें १४ आश्वास हैं । प्रशस्तिसे मालूम होता है यह ग्रन्थ कविने अपने परिपोषक राजा लक्ष्मीधरकी प्रेरणासे बनाया है । इसमें लक्ष्मीधर राजाकी और श्रीकृष्णकी समता बतलाकर स्तुति की गई है । लक्ष्मीधरके गुरु नेमिचन्द्र मुनि थे और कविके गुरु कल्याणकीर्ति थे। कल्याणकीर्ति मलधारि गुणचन्द्रके शिष्य और मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवके—जो कि १११५ में मृत्युको प्राप्त हुए हैं—सतीर्थ या सहपाठी थे, ऐसा श्रवणबेलगुलके ५५ वें शिलाशासनसे मालूम होता है। गुणचन्द्र भुवनैकमल्ल राजा (१०६९ से १०९७ तक) के समयमें उनके गुरु थे। इसकी कविता सुगम और ललित है। रुद्रभट्ट (११८०), अण्डय्य

(१२३५), मंगरस (१५०९), और दोड्डय आदि कवियोंने इसकी प्रशंसा की है।

३३. उदयादित्य—समय ईस्वी सन् ११५० के लगभग। कविरत्नशेखर, साहित्यविद्याधर, राजसुकविरत्नाभरण, कविराजशेखर, साहित्यरत्नाकर आदि इसके उपनाम थे। इसका बनाया हुआ केवल उदयादित्यालंकार नामका एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है; परन्तु इसकी विरदावली तथा रचनाचातुर्य देखकर अनुमान होता है कि इसने और भी कई ग्रन्थ बनाये होंगे। उदयादित्यालंकार केवल ७२ पद्योंका ग्रन्थ है जिसमें काव्यभेद, रीति, रस, काव्यके गुण, अलंकार आदि बातोंका संक्षेपसे वर्णन है। पूर्वकालीन कवियोंमेंसे इसने केवल मुञ्ज, भोज और श्रीहर्ष इन तीन संस्कृत कवियोंका ही स्मरण किया है; कनड़ीके एक भी कविका स्मरण नहीं किया। उक्त ग्रन्थमें एक जगह लिखा है कि यह सिंहासन पर आरूढ होकर राज्यकार्य करता था। इससे मालूम होता है कि यह कोई माण्डलिक राजा था। अपने ग्रन्थमें यद्यपि इसने समयका उल्लेख नहीं किया है, तो भी अनुमानसे इसका समय ११५० के लगभग सिद्ध होता है। क्योंकि ईस्वी सन् १००४ से १०५९ तक राज्य करनेवाले भोजदेवका इसने स्मरण किया है इससे भोजदेवके पीछे और मल्लिकार्जुन महाकविने—जो कि १२४५ में हुआ है—अपने सूक्तिसुधार्णव महाकाव्यमें इसका एक पद्य उद्धृत किया है, इससे उसके पहले इसका अस्तित्व होना चाहिए।

३४. सुमनोबाण—समय ई० सन् ११५० के लगभग। इस समय इस कविका बनाया हुआ कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है; तो भी मल्लिकार्जुन, जन्न, केशिराज आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध कवियोंने इसकी प्रशंसा की है। इससे मालूम होता है कि यह कोई श्रेष्ठकवि था। जन्न कविने अपने अनन्तनाथपुराणमें जैन-पुराणोंके रचयिता कवियोंका उल्लेख करते समय इसका भी उल्लेख किया है। इससे सिद्ध होता है कि इसने भी किसी पुराणग्रन्थकी रचना की होगी। यह जन्न कविका पिता, मल्लिकार्जुनका ससुर, और मल्लिकार्जुनके पुत्र केशिराज कविका नाना था; ऐसा उक्त तीनों कवियोंके रचे हुए यशोधर काव्य, सूक्ति-सुधार्णव और शब्दमणिदर्पण ग्रन्थोंसे मालूम होता है। जन्न कविके एक पद्यसे जान पड़ता है कि उसका शिक्षागुरु द्वितीय नागवर्म तो चालुक्यनरेश जगदेकमल्लके दरबारका कटकोपाध्याय था और पिता सुमनोबाण बल्लाल नरसिंहके दरबारमें कट-कोपाध्याय था। बल्लाल नरसिंहदेवने ११३६ से ११७१ तक राज्य किया है।

इससे इस कविका समय ११५० के लगभग निश्चित किया जा सकता है। इस कविका वास्तविक नाम शंकर था और सुमनोबाण तथा बाललोचन ये इसके उपनाम थे। मालूम होता है कि यह कवि पहले स्मार्त था, जैनधर्मको इसने पीछे धारण किया था। इसके स्मार्त होनेका कुछ कुछ आभास इससे भी मिलता है कि इसका नाम शंकर, स्त्रीका नाम गंगा और जामाताका मल्लिकार्जुन था।

३५. वृत्तिविलास—समय ईस्वीसन् ११६०। इसके धर्मपरीक्षा और शास्त्रसार नामके दो ग्रन्थोंका पता लगता है। धर्मपरीक्षा, अमितगतिकृत संस्कृत धर्मपरीक्षाके आधारसे रची गई है। इसकी रचना बहुत ही सरल और सुन्दर है। इसके गद्यपद्यमय दश आश्वास हैं। प्रारंभमें वर्द्धमानस्वामीकी स्तुति की है। फिर सिद्धपरमेष्ठी, यक्षयक्षिणी, और सरस्वतीको नमस्कार करके केवलियोंसे लेकर द्वितीय हेमदेव तक गुरुओंका स्मरण किया है। ग्रन्थके अन्तमें "विनमदमरमुकुटतटघटितमणिगणमरीचिमञ्जरीपुञ्जरञ्जितपादारविन्दभगवदर्हत्परमेश्वरवदनविनिर्गतश्रुताम्भोधिवर्द्धनसुधाकरे श्रीमदमरकीर्तिरावुलव्रतीश्वरचरणसरसीरुहषट्पदवृत्तिविलासविरचिते धर्मपरीक्षाग्रन्थे--" इत्यादि गद्य दिया है। दूसरे ग्रन्थ शास्त्रसारका कुछ भाग 'प्राक्काव्यमाला' नामकी कनड़ी–ग्रन्थमालामें प्रकाशित हुआ है; परन्तु पूरा ग्रन्थ इस समय दुष्प्राप्य है। अपने ग्रन्थमें इसने अपने समय आदिका कुछ भी परिचय नहीं दिया है; परन्तु इसने जिन शुभकीर्ति व्रती, सैद्धान्तिक माघनन्दि यति, भानुकीर्ति यति, धर्मभूषण, अमरकीर्ति (कविका गुरु), अभयसूरि, वादीश्वर आदि जैनाचार्योंका स्तवन किया है, उनके समयका विचार करनेसे इसका समय ११६० के लगभग निश्चित होता है। उक्त आचार्योंमेंसे शुभकीर्ति १११५ में स्वर्गवास करनेवाले मेघचन्द्रके समकालीन थे। माघनन्दि सैद्धान्तिकका समय ११६० है। भानुकीर्ति ११६३ में समाधिस्थ होनेवाले देवकीर्तिके सहपाठी थे। अभयसूरि, बल्लाल नरेश और चारुकीर्ति पण्डितके समकालीन थे। क्योंकि ऐसा उल्लेख मिलता है कि अभयसूरिने इन दोनोंको एक बड़ी भारी व्याधिसे मुक्त करके श्रवणबेलगुलमें निवास कराया था। बल्लाल विष्णुवर्धन राजाका भाई था और चारुकीर्ति श्रुतकीर्तिका पुत्र था। श्रवणबेलगुलके जैन गुरुओंने 'चारुकीर्ति पण्डिताचार्य' का पद १११७ के अनन्तर धारण किया था। इससे मालूम होता है कि यह चारुकीर्ति श्रवणबेलगुलका सबसे प्रथम चारुकीर्ति पण्डित होगा। श्रवणबेलगुलके १११ वें शिलालेखमें विशालकीर्तिके शिष्य

शुभकीर्ति, शुभकीर्तिके शिष्य धर्मभूषण और धर्मभूषणके शिष्य अमलकीर्ति बतलाये गये हैं और शुभकीर्ति ११९५ में स्वर्गस्थ होनेवाले मेघचन्द्रके समकालीन थे। इसलिए शुभकीर्तिके शिष्य धर्मभूषण और प्रशिष्य अमलकीर्तिका समय ११५० के लगभग होना चाहिए। ये अमलकीर्ति या अमरकीर्ति ही वृत्तिविलासके गुरु थे। शिलालेखकी गुरुपरम्परा और धर्मपरीक्षोल्लिखित गुरुपरम्परा बराबर मिलती है।

३६. बालचन्द्र—समय ईस्वी सन् ११७० । ये आध्यात्मिक बालचन्द्रके नामसे प्रसिद्ध हैं। ये मूलसंघ–देशीयगण–पुस्तकगच्छ और कुन्दकुन्दके अन्वयमें थे। इनके गुरुका नाम नयकीर्ति था। नयकीर्तिका स्वर्गवास ११७७ में हुआ था। दमनन्दि इनके भाईका नाम था। अनेक शिलालेखोंमें इनकी स्तुतिके पद्य मिलते हैं। इनकी बनाई हुई समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय (प्राभृतत्रय) परमात्म–प्रकाश, तत्त्वार्थ आदि कई ग्रन्थोंकी कनड़ी टीकायें हैं जो बहुत ही उच्च श्रेणीकी हैं। एक जिनस्तुति नामका उत्तम स्तोत्र भी इनका बनाया हुआ है। प्राभृतत्रयके व्याख्यानके अन्तमें इन्होंने निम्नलिखित गद्यपंक्ति दी है:—
" इति समस्तसैद्धान्तिकचक्रवर्तिश्रीनयकीर्तिनन्दन––विनेयजनानन्दन––निजरुचिसागरनन्दि–परमात्मदेवसेवासादितात्मस्वभावनित्यानन्द—बालचन्द्रदेवविरचिता समयसारप्राभृतसूत्रानुगततात्पर्यवृत्तिः।" इनकी तत्त्वार्थसूत्रकी टीकाका नाम 'तत्त्वरत्नप्रदीपिका' है। यह टीका कुमारचन्द्र भट्टारकके प्रतिबोधके लिए बनाई गई, ऐसा उल्लेख उक्त टीकामें ही मिलता है।

३७. नेमिचन्द्र––समय ई० सन् ११७० । यह बहुत प्रसिद्ध कवि हुआ है। वीरबल्लालदेव और लक्ष्मणदेव इन दो राजाओंकी सभामें इसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। कलाकान्त, कविराजमल्ल, कविधवल, शृङ्गारकारागृह, कविराजकुंजर, साहित्यविद्याधर, विद्यावधूवल्लभ, सुकविकण्ठाभरण, विश्वविद्याविनोद, भारती–चित्तचोर, चतुर्भाषाकविचक्रवर्ती, सुकरकविशेखर, कृतिकुलदीप आदि इसके विरद थे। इसके बनाये हुए लीलावती और नेमिनाथपुराण नामके दो ग्रन्थ हैं। लीलावती कनड़ी भाषाका चम्पूग्रन्थ है। इसमें १४ आश्वास हैं। कविने केवल एक वर्षमें इसे बनाकर पूर्ण किया था। यह ग्रन्थ मुख्यतः श्रृंगाररसात्मक है। इसकी कथाका सार यह है––" कदम्बवंशीय राजाओंकी राजधानी जयन्तीपुर अथवा जनवास नामके नगरमें थी। वहाँ चूडामणि नामका राजा राज्य करता था। उसकी प्रधान रानीका नाम पद्मावती और पुत्रका नाम कन्दर्पदेव था। गुणगन्ध

नामक मंत्रीका पुत्र मकरन्द राजकुमारका बहुत ही प्यारा मित्र था। कन्दर्प एक दिन स्वप्नमें एक रूपवती स्त्रीके दर्शन करके उस पर अतिशय आसक्त हो गया। दूसरे दिन उस स्त्रीकी खोजमें वह अपने मित्रके साथ उस दिशाकी ओर चल दिया जिस दिशाकी ओर उसने उसे स्वप्नमें जाते देखा था। चलते चलते वह कुसुमपुर नामके नगरमें पहुँचा। वहाँके राजा शृंगारशेखरकी लीलावती नामकी एक रूपवती राजकुमारी थी। इस राजकुमारीने भी स्वप्नमें एक राजकुमारको देखा था और उस पर अपना तन मन वार दिया था। स्वप्नदृष्ट राजकुमारकी खोजमें उसने कई दूत इधर उधर भेजे थे। उन दूतोंके द्वारा लीलावती और कन्दर्पका परिचय हो गया और अन्तमें उन दोनोंका विवाह हो गया। लीलावतीको प्राप्त करके कन्दर्प अपनी राजधानीको लौट आया और सुखपूर्वक राज्यकार्य सम्पादन करने लगा।" इसका कथाभाग सुबन्धु कविकी वासवदत्ताका अनुकरण मालूम होता है। बाहुबलि कविने (ई० स० १६००) अपने नागकुमारचरितमें लीलावतीकी प्रशंसामें लिखा है कि "लीलावतीको दृष्टिदोष (नज़र) न लग जाय, इस भयसे कादम्बरीको दग्ध करके मानो उसके मस्तकपर तिलक लगा दिया है!" इस उक्तिका उल्लेख देवचंन्द्र दोड्डय्य आदि और भी कई कवियोंने किया है। गरज यह कि लीलावती ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर है। इसकी रचना गंभीर शृंगाररसपूरित हृदयहारिणी है। इससे कविकी प्रतिभा शब्दसामग्री और वाक्पद्धति अनन्यसाधारण प्रतीत होती है। दूसरा ग्रन्थ नेमिनाथपुराण है। इसमें बावीसवें तीर्थंकर नेमिनाथका चरित है। वीरवल्लाल नरेश (११७१–१२१९) के पद्मनाभ नामक मंत्रीकी प्रेरणासे यह बनाया गया था। यह ग्रन्थ अधूरा मालूम होता है। क्योंकि इसके प्रारंभमें यह प्रतिज्ञा की गई है कि नेमिनाथकी कथामें गौणतासे वसुदेव कृष्ण और कन्दर्पकी कथाका भी समावेश किया जायगा; परन्तु आठवें आश्वासमें कंसवध तकका कथाभाग लिखकर ही ग्रन्थ समाप्त कर दिया गया है। आश्चर्य नहीं, जो ग्रन्थ पूर्ण होनेके पहले ही कविका देहान्त हो गया हो। इस ग्रन्थका नाम 'अर्धनेमि' भी शायद इसी लिए पड़ गया है। इस ग्रन्थके प्रारंभमें तीर्थंकर, सिद्ध, यक्षयक्षिणी और गणधरकी स्तुति करके गृद्धपिच्छीसे लेकर पूज्यपादपर्यन्त आचार्योंका स्मरण किया गया है। प्रत्येक आश्वासके अन्तमें निम्नलिखित गद्य मिलता है "इति मृदुपदबन्धबन्धुरसरस्वतीसौभाग्यव्यंग्यभंगीनिधानदीपवर्ति–चतुर्भाषाकविचक्रवर्तिनेमिचन्द्रकृते श्रीमत्प्रतापचक्रवर्तिश्रीवीरबल्लाल-

प्रसादासादित–महाप्रधानपदवीविराजित-सज्जेवल्लपद्मनाभदेवकारिते नेमिनाथपुराणे" लीलावती ग्रन्थके अन्तमें इसने एक पद्यमें लिखा है कि राजा लक्ष्मणदेव समुद्रवलयांकित पृथ्वीका स्वामी है। इसी लक्ष्मणदेवका कर्णपार्यने (११४०) अपने नेमिनाथ पुराणमें उल्लेख किया है। कर्णपार्यके समयमें लक्ष्मणदेव सिंहासनारूढ़ नहीं हुआ था; उसका पिता या बड़ा भाई विजयादित्य राज्य करता था; परन्तु नेमिचन्द्रके समय वह राज्यका स्वामी था। इससे हम ई० स ०११४० में रहनेवाले कर्णपार्यकी एक पीढ़ीके अनन्तर नेमिचन्द्रका समय निश्चित करते हैं। इसके सिवा नेमिचन्द्रने नेमिपुराणकी रचना जिस वीर बल्लालके मंत्री पद्मनाभकी प्रेरणासे की है, उसका समय ११७२ से १२१९ पर्यन्त है। इससे भी उक्त समय ठीक प्रतीत होता है । यह कहनेकी तो कुछ जरूरत ही नहीं है कि नेमिपुराण लीलावतीके पीछे बनाया गया है । जन्न, पार्श्व, कमलभव, मधुर, मंगरस, बाहुबलि आदि पिछले कवियोंने इस कविकी बहुत प्रशंसा की है।

३८. बूचिराज–समय ई० स० ११७३। यह वीर बल्लाल राजाका मंत्री और श्रीपाल त्रैविद्यका शिष्य था। इसका कोई भी ग्रन्थ प्राप्य नहीं है; परन्तु कहते हैं कि यह पोन्नके समान मार्मिक और श्रेष्ठ कवि था । इसने अपना सारा ऐश्वर्य जिनसेवामें लगा दिया था।

३९. बोप्पण पण्डित–समय ई० स० ११८०। 'सुजनोत्तंस' इसका उपनाम था। अच्चण, पार्श्व, केशिराज आदि कवियोंने इसकी बहुत प्रशंसा की है। केशिराजने इसका 'सुकविसमाजनुत' कहकर उल्लेख किया है और इसकी ग्रन्थपद्धतिको लक्ष्यभूत मानकर अपनी रचना की है। इससे जान पड़ता है कि, यह अनेक ग्रन्थोंका रचयिता होगा; परन्तु इस समय उसकी केवल दो छोटी छोटी रचनायें ही मिलती हैं, जिनमेंसे एक तो गोमटेश्वरकी स्तुति है और दूसरी 'निर्वाणलक्ष्मीपति नक्षत्रमालिका' नामकी कविता है। गोमटेश्वरकी स्तुतिमें कनड़ीके २७ पद्य हैं जो कि श्रवणबेलगुलके ८५ वें शिलालेख पर लिखे हुए हैं। नयकीर्तिके शिष्य आध्यात्मिक बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह स्तुति बनाई गई थी। इससे मालूम होता है कि यह बालचन्द्रका समकालीन था और जिस शिलालेख पर उक्त स्तुति लिखी है, वह ११८० का लिखा हुआ है। अतएव यही इसका समय है। निर्वाणलक्ष्मीपतिनक्षत्रमालिकामें २७ पद्य हैं और प्रत्येक पद्यमें 'निर्वाणलक्ष्मीपति' पद आया है।

४०. अग्गल—समय ईस्वी सन् ११८९। इसके पिताका नाम शान्तीश, माताका पोचांबिका, और गुरुका श्रुतकीर्ति त्रैविद्य था। यह कवि मूल संघ, देशीय गण, पुस्तक गच्छ और कुन्दकुन्दान्वयमें हुआ है। इंगलेश्वर नामके ग्राममें इसका जन्म हुआ था। इसके जैनजनमनोहरचरित, कविकुलकलभव्रातयूथाधिनाथ, काव्य-कर्णधार, भारती-बालनेत्र, साहित्यविद्याविनोद, जिनसमयसरस्सार-केलि-मराल और सुललितकवितानर्तकीनृत्यरंग आदि विरद थे। इसके एक पद्यसे मालूम होता है कि यह किसी राज-दरबारका प्रसिद्ध कवि था। इसका बनाया हुआ एक चन्द्रप्रभपुराण ही मिलता है। इस ग्रन्थमें आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभका चरित लिखा गया है। मद्रास लायब्रेरीमें जो बिलगी नामक स्थानका शिलालेख है उससे मालूम होता है कि कविने यह ग्रन्थ अपने गुरु श्रुतकीर्ति त्रैविद्यदेवकी आज्ञासे लिखा था। ग्रन्थकी रचनाका समय शक संवत् १०११ है, ऐसा उसके एक पद्यसे मालूम होता है। इस ग्रन्थकी भाषा बहुत ही प्रौढ और संस्कृत-पद-बहुल है। ग्रन्थमें १६ आश्वास हैं और प्रत्येक आश्वासके अन्तमें निम्नलिखित गद्य है—"इति परमपुरुनाथकुलभूभृत्समुद्भूत-प्रवचनसरित्सरिन्नाथ-श्रुतकीर्तित्रैविद्यचक्रवर्ति-पदपद्मनिधानदीपवर्तिश्रीमदग्गलदेवविरचिते चन्द्रप्रभचरिते—" आचण्ण, देवकवि, अण्डय्य, कमलभव, बाहुबलि और पार्श्व आदि कवियोंने अपने ग्रन्थोंमें इस कविकी प्रशंसा की है।

४१. आचण्ण—समय ई०स० ११९५। यह कवि भरद्वाजगोत्री जैन ब्राह्मण था। इसके पिताका नाम केशवराज, माताका मल्लाम्बिका, गुरुका नन्दियोगीश्वर[1] और ग्रामका पुरीकरनगर (पुलगिर) था। इसके पिता केशवराजने और रेचण नामके सेनापतिने जो कि वसुधैकबान्धवके नामसे प्रसिद्ध था वर्द्धमानपुराण नामक ग्रन्थका प्रारंभ किया था; परन्तु दुर्दैवसे उनका शरीरान्त हो गया और तब उक्त ग्रन्थको आचण्णने समाप्त किया। इस कविकी पार्श्वकविने अपने पार्श्वनाथपुराणमें—जो कि १२०५ में रचा गया है—प्रशंसा की है। इससे स्पष्ट है कि यह १२०५ से पहले हो गया है और इसने अपने पूर्वकालीन कवियोंकी स्तुति करते समय अग्गल कविकी—जो कि ११८९ में हुआ है—प्रशंसा की है, इससे यह ११८९ के पीछे हुआ है। इसके सिवा रेचण चमूपति कलचुरि राजाका

१ मद्रासके प्राच्यकोशालयके एक शिलालेखसे मालूम होता है कि नन्दियोगीश्वर ११८९ में मौजूद थे।

मंत्री था और शिलालेखोंसे मालूम होता है कि आहवमल्लके (११८१–११८३) के और नवीन हयशालवंशके वीरबल्लाल (११७२–१२१९) के समयमें भी वह जीवित था। इससे इस कविका समय ११९५ के लगभग निश्चित होता है। वर्द्धमान पुराणमें महावीर तीर्थंकरका चरित है। इसमें १६ आश्वास हैं । इसकी रचना अनुप्रास यमक आदि शब्दालंकारोंसे युक्त और प्रौढ है । इस कविका और कोई ग्रन्थ नहीं मिलता ।

४२. बालचन्द्र कविकन्दर्प—समय ई० स० १२०० के लगभग। जन्न कवि (१२०९) के लेखसे मालूम होता है कि यह उसकी पत्नी लकुम्मा-देवीका गुरु था। इसके पिताका नाम सकलचन्द्र और गुरुका माधवचन्द्र था। जन्न और पार्श्व कविकी उक्तियोंसे मालूम होता है कि यह एक प्रसिद्ध कवि था; परन्तु इसका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं ।

४३. बन्धुवर्म—इसके विषयमें सिवा इसके कि यह वैश्य जातिका था और किसी बातका पता नहीं लगता। इसके बनाये हुए हरिवंशाभ्युदय और जीवसम्बोधन नामके दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पहला ग्रन्थ गद्यपद्यमय है और उसके १४ आश्वास हैं। दूसरा ग्रन्थ पद्यमय है और उसके १२ अध्यायोंमें अध्रुव अशरण आदि बारह भावनाओंका वर्णन है। इसकी रचना ललित और नीतिवैराग्यमय है। कमलभव नामक कविने जो कि १२३५ में हुआ है उसकी प्रशंसा की है, इससे यह १२३५ के पहले १२०० के लगभग हुआ होगा

४३. केशियण्ण—यह कवि ई० स० १२०० के लगभग हुआ है। इसका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं; परन्तु पार्श्वकविके पार्श्वपुराणसे मालूम होता है कि इसने सिंहप्रायोपगमन नामका ग्रन्थ बनाया है ।

४४. वासुदेव—समय ई० सन् १२०० । पार्श्वकविने कर्नाटक कवियोंका स्तवन करते समय इसका भी उल्लेख किया है। इससे जान पड़ता है कि यह एक प्रसिद्ध कवि था; परन्तु इसका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं। महालक्ष्मीविरचित रामपट्टाभिषेकमें एक वासुदेव कविकी स्तुति की गई है। संभवतः यह वही वासुदेव होगा ।

४५. पार्श्व पण्डित—समय ई० स० १२०५। यह सौंदत्तिके रट्टराजवंशी राजा कार्तवीर्य चौथे (१२०२–१२२०) का सभाकवि था। इसने अपने एक

पद्यमें कहा है कि कार्तवीर्यका पुत्र लक्ष्मणोर्वीय था। यह लक्ष्मणोर्वीय १२२९ में राज्य करता था। इसके सिवा बाम्बे रायल एशियाटिक सोसायटीके जर्नलमें जो एक शिलालेख प्रकाशित हुआ है, उसे पार्श्वकविने शक संवत् ११२७ अर्थात् ईस्वी सन् १२०५ में लिखा था। उसमें लिखा है कि कोण्डीमण्डलके वेणुग्राममें रट्टवंशीय राजा कार्तवीर्य—जो कि मल्लिकार्जुनके सहोदर भाई थे—राज्य करते थे और उन्होंने अपने मण्डलके आचार्य शुभचन्द्र भट्टारकके लिए उक्त ग्राम कररहित कर दिया था। यह शिलालेख पार्श्वकविका ही लिखा हुआ है। इसमें इस कारण और भी कोई सन्देह नहीं रहता कि कविने अपने पार्श्वपुराणमें जिस कविकुल-तिलक विरदको अपने नामके साथ जोड़ा है, वही उक्त शिलालेखके भी अन्तिम पद्यमें लिखी है। इससे इसका समय १२०५ के लगभग निश्चित होता है। सुकविजनमनोहर्षशस्यप्रवर्ष, विबुधजनमनःपद्मिनीपद्ममित्र, कविकुलतिलक आदि इसके प्रशंसासूचक उपनाम थे। इसका बनाया हुआ एक पार्श्वनाथपुराण नामका ग्रन्थ ही उपलब्ध है। यह गद्यपद्यमय ग्रन्थ है। इसके १६ आश्वास हैं। इसके प्रारंभमें पार्श्वजिनकी स्तुति करके कविने सिद्धसेनसे लेकर वीरनन्दि पर्यन्त गुरुओंकी और फिर पंप, पोन्न, रन्न, धनंजय, भूपालदेव, अच्चण्ण, अग्गल नागचन्द्र, बोप्पण, आदि पूर्व कवियोंकी स्तुति की है। कविने अपने इस ग्रन्थकी स्वयं चार पद्योंमें प्रशंसा की है। अकलंकभट्टने अपने शब्दानुशासनमें (१६०४) में इस ग्रन्थके बहुतसे पद्य उदाहरणस्वरूप संग्रह किये हैं।

४६. कल्लय्य—यह लक्ष्मरसका पुत्र था। इसने वीर बल्लाल राजाके समयमें (१२०६) में चित्रदुर्गका २३ वाँ शिलालेख लिखा है। उससे मालूम होता है कि यह एक अच्छा कवि था।

४७. जन्न—समय ई० स० १२०९। इसका जन्म कम्मे नामक वंशमें हुआ था। इसके पिताका नाम शंकर और माताका गंगादेवी था। शंकर हय-शालवंशीय राजा नरसिंहके यहाँ कटकोपाध्याय (युद्धविद्याका शिक्षक या सेनापति?) था। गंगादेवीके गुरु काणूरगणके रामचन्द्रदेव नामक मुनि थे जो माधवचन्द्रके शिष्य थे। रामचन्द्रदेव जगदेकमल्लके दरबारके कटकोपाध्याय थे। ये जन्नके गुरु नाग-वर्मके भी गुरु थे। जैनकवि सूक्तिसुधार्णव ग्रन्थके कर्त्ता माल्लिकार्जुनका साला और शब्दमणिदर्पणके कर्त्ता केशिराजका मामा था। यह चोल कुलके नरसिंहदेव राजाके यहाँ सभाकवि सेनानायक और मंत्री भी रहा है। यह बड़ा भारी

धर्मात्मा था। इसने किलेकल दुर्गमें अनन्तनाथका मान्दिर और द्वारसमुद्रके विजयी पार्श्वनाथके मन्दिरका महाद्वार बनवाया था। यशोधरचरित, अनन्तनाथपुराण और शिवायस्मरतन्त्र नामके तीन ग्रन्थ इसके रचे हुए मिलते हैं।

४८. मुनिचन्द्र—समय ई० स० १२२९। द्वितीय गुणवर्म (ई० स० १२३५) ने—जो कि इनके शिष्य थे–इन्हें अपने पुष्पदन्तपुराणमें 'उभयकविकमलगर्भ' कह कर स्मरण किया है और महाबलकवि (१२५४) ने अपने नेमिनाथपुराणमें इनकी 'अखिलतर्कतंत्रमंत्रव्याकरणभरतकाव्यनाटकप्रवीणं' लिखकर प्रशंसा की है। इनके 'उभयकवि' विशेषणसे मालूम होता है कि ये संस्कृत और कनड़ी दोनों ही भाषाओंके कवि और ग्रन्थकर्त्ता होंगे; परन्तु अभीतक इनका कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। सौंदत्तिके शिलालेखोंसे—जो कि शक संवत् ११५१ और १२२९ के लिखे हुए हैं और जो रायल एशियाटिक सुसाइटी बाम्बे ब्रांचके जर्नलमें मुद्रित हो चुके हैं–मालूम होता है कि ये रट्टराज कार्तवीर्यके गुरु थे और उसके पुत्र लक्ष्मीदेवको इन्होंने शस्त्रविद्या और शास्त्रविद्या दोनोंकी शिक्षा दी थी। लक्ष्मीदेवके समयमें ये उसके सचिव या मंत्री भी रहे हैं। ये बड़े ही वीर और पराक्रमी थे, इसलिए इन्होंने शत्रुओंको दबाकर रट्टराज्यकी रक्षा की थी। इस कारण इन्हें 'रट्टराज प्रतिष्ठाचार्य' की उपाधि मिली थी। इनके समयमें रट्टराजके शान्तिनाथ, नागस और मल्लिकार्जुन भी आमात्य रहे हैं।

४९. शिशुमायण—इस कविने त्रिपुरदहनसांगत्य और अंजनाचरित नामके दो ग्रन्थोंकी रचना की है। इन ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि होयशल देशके अन्तर्गत नयनापुर नामका एक ग्राम है। उसके समीप ही कावेरी नदीकी नहर बहती है और वहाँ देवराजके इच्छानुसार राजराजने नेमिनाथ भगवान्का विशाल मन्दिर बनवाया है। इस ही ग्राममें उक्त कविके पितामह मायणशेट्टि रहते थे। वे बड़े भारी धनिक और व्यापारी थे। उनकी स्त्री तामरसिके गर्भसे बोम्मशेट्टि नामका पुत्र हुआ। अपनी योग्यतासे यह राजसभाका रत्नदीपक कहलाता था। बोम्मशेट्टिकी स्त्री नेमांबिकाके गर्भसे कवि शिशुमायणका जन्म हुआ। काणूरगणके भानु मुनि इसके गुरु थे। बेलुकेरेपुरके राजा गुम्मटदेवकी रुचि और प्रेरणासे कविने अंजनाचरितकी रचना की थी।

५०. गुणवर्म (द्वितीय)—समय ई० स० १२३५ । कूंडि नामके स्थानमें इस कविका निवास था । इसके गुरु वे ही मुनिचन्द्र हैं, जो कि कार्तवीर्य नरेशके गुरु थे । कार्तवीर्यका 'अहितक्ष्माभृद्वज्र' सेनापति शान्तिवर्म इस कविका पोषक था । इसके बनाये हुए पुष्पदन्तपुराण और चन्द्रनाथाष्टक ये दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं । इसने अपने ग्रन्थमें पूर्व कवियोंका स्मरण करते समय जन्न कवि (१२३०) की स्तुति की है, इसलिए यह उनसे पीछे हुआ है और मल्लिकार्जुन (१२४५) ने अपने सूक्तिसुधार्णवमें इसके पुष्पदन्त पुराणके पद्योंको उद्धृत किया है, इसलिए उनसे पहले हुआ है । अर्थात् ईस्वी सन् १२३५ के लगभग इसका समय समझना चाहिए । इसकी रचना उच्चश्रेणीकी और प्रासबद्ध है । गुणाब्जवनकलहंस, कवितिलक, काव्यसत्कलार्णवमृगलक्ष्म आदि इसके विरद थे ।

५१. कमलभव—समय ई० सन् १२३५ । इस कविके गुरु माघनंदि पण्डित यति थे जो कि देशीय गण, पुस्तक गच्छ और कुन्दकुन्दान्वयमें हो गये हैं । इसका बनाया हुआ शान्तीश्वरपुराण नामका ग्रन्थ मिलता है । उसकी रचना बहुत ही ललित, विस्तृत और निरर्गल है । इसने भी पूर्वके कवियोंकी स्तुति करते समय जन्न (१२३०) का स्मरण किया है, और मल्लिकार्जुन (१२४५) ने अपने सूक्तिसुधार्णवमें इसके शान्तीश्वरचारितके पद्य भी दिये हैं, इसलिए इसका समय भी गुणवर्मके लगभग समझना चाहिए । इसके कविकंजगर्भ और सूक्तिसन्दर्भगर्भ ये दो उपनाम या विरद थे ।

५२. अण्डय्य—समय ई० स० १२३५ । इसके पितामहका नाम भी अण्डय्य था । अण्डय्यके तीन पुत्र थे—शान्त, गुम्मट और वैजण । ज्येष्ठ शान्तकी पत्नी बल्लब्बेके गर्भसे कवि अण्डय्यका जन्म हुआ । इसके निवासस्थानका तो इसके ग्रन्थोंसे कोई पता नहीं लगता; परंतु देश इसका कन्नड़ था । इसने 'कब्बिगर' नामका काव्यग्रन्थ लिखा है । इसमें यह विशेषता है कि इसकी भाषा शुद्ध कनड़ी है—उसमें संस्कृतका मिश्रण नहीं है । संस्कृतबहुल कनड़ीसे इस कविको अरुचि थी । इसने भी जन्न कविकी स्तुति की है और सूक्तिसुधार्णवमें इसके पद्य संग्रह किये गये हैं, इसलिए इसका समय भी ई० स० १२३५ के लगभग माना जा सकता है ।

५३. महाबल कवि—समय ई० स० १२५४ । यह कवि भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण था । इसके पिताका नाम रायिदेव, माताका राजियक्का और

गुरुका माधवचन्द्र था। माधवचन्द्र त्रैविद्यचक्रवर्ति इसके विद्यागुरु मालूम होते हैं। क्योंकि अपने नेमिनाथपुराणके प्रत्येक आश्वासके अन्तमें यह " माधवचन्द्रत्रैविद्यचक्रवर्तिश्रीपादपद्मप्रसादासादितसकलकलाकलाप " इत्यादि पद लिखकर अपना नाम लिखता है। सहजवविमनोगेह (?), माणिक्यदीप, और विश्वविद्याविरंचि इन तीन उपनामोंसे इसकी प्रसिद्धि है । इसका बनाया हुआ नेमिनाथपुराण नामका एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है। यह कनड़ी भाषाका चम्पू ग्रन्थ है । इसमें २२ आश्वास हैं और प्रधानतासे हरिवंश और कुरुवंशका वर्णन है । इसके प्रारंभमें नेमिनाथ तर्थिकर, सिद्ध, सरस्वती आदिकी स्तुति करके भूतबलिसे लेकर पुष्पसेन पर्यन्त गुरुओंका स्तवन किया गया है । इसके बाद अपने आश्रयदाता केतनायकका और अपना परिचय देकर कविने ग्रन्थका प्रारंभ किया है । केतनायक परम वीर और स्वयं भी कवि था। उसीके अनुरोधसे इस ग्रन्थकी रचना हुई थी। ग्रन्थकी रचना सुन्दर और प्रौढ है। कविने इस ग्रन्थको शक संवत् ११७६ अर्थात् ई० सन् १२५४ में समाप्त किया है।

५४. केशिराज—समय ई० स० १२६०। यह सूक्तिसुधार्णवके कर्त्ता मल्लिकार्जुनका पुत्र, होयशालवंशीय राजा नरसिंहके कटकोपाध्याय सुमनोवाणका दौहित्र और जन्न कविका भानजा है। इसके बनाये हुए चोलपालकचरित, सुभद्राहरण, प्रबोधचन्द्र, किरात और शब्दमणिदर्पण ये पाँच ग्रन्थ हैं; पर इनमेंसे केवल एक शब्दमणिदर्पण उपलब्ध है। यह कर्नाटक भाषाका सुप्रसिद्ध व्याकरण है । इसकी जोड़का विस्तृत और स्पष्ट व्याकरण कनड़ीमें दूसरा नहीं । इसकी रचना पद्यमयी है और इस कारण कविने स्वयं ही इसकी वृत्ति भी लिख दी है। सन्धि, नाम, समास, तद्धित, आख्यान, धातु, अपभ्रंश, अव्यय और प्रयोगसार इन आठ अध्यायोंमें यह ग्रन्थ विभक्त है।

५५. समुदायकर माघनन्दि—समय ई० सन् १२६०। इसने शास्त्रसारसमुच्चय नामक ग्रन्थकी कर्नाटकी टीका लिखी है । माघनन्दिश्रावकाचार नामक कनड़ीमिश्रित संस्कृत ग्रन्थ भी इसका बनाया हुआ है। इसने अपनी गुरुपरम्परा इस प्रकार बतलाई है—श्रीधरदेव, शिष्य वासूपूज्य, पुत्र उदयेन्दु, पुत्र कुमुदेन्दु और कुमुदेन्दुका शिष्य मैं (माघनन्दि)। इस कविके विषयमें और अधिक परिचय नहीं मिलता।

५६. बालचन्द्र—समय ई० स० १२७३। द्रव्यसंग्रहसूत्र पर इसने शक संवत् ११९५ में एक टीका लिखी है । इस टीकाके अन्त्य पद्योंसे मालूम होता है कि इसके गुरु नेमिचन्द्र और अभयचन्द्र थे ।

५७. कुमुदेन्दु—समय ई० स० १२७५। परवादिगिरिवज्र और सरसकवितिलक ये इस कविके उपनाम थे। कुमुदेन्दु-रामायण नामका ग्रन्थ इसका बनाया हुआ है। ग्रन्थकी रचना सुन्दर है। इस ग्रन्थकी प्रशस्तिसे मालूम होता है कि साहित्यकुमुदवनचन्द्रचतुरचतुर्विधपाण्डित्यकलाशतदलविकसनादिनमणि–वादिधराधरकुलिश-कविमुखमणिमुकुरश्रीपद्मनन्दिव्रतिका यह पुत्र था, कामांबिका इसकी माता थी और परमागमनाटकतर्कव्याकरणनिघण्टुछन्दोलंकृतिचरितपुराण-षडङ्गस्तुतिनीतिस्मृतिवेदान्तभरतसुरतमन्त्रौषधिसहित नरतुरगगजमणिगणपरीक्षा-परिणत श्रीअर्हनन्दिव्रति इसके पितृव्य (बड़े काका) थे।

५८. बालचन्द्र—समय ई० स० १२८३। इस कविका बनाया हुआ ' उद्योगसार ' नामका केवल एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है जो कि कनड़ी भाषामें है। इस ग्रन्थमें कवि अपना नाम तो प्रगट नहीं करता है; परंतु निम्नलिखित कनड़ी मिश्रित संस्कृत पद्यमें आपको नेमिचन्द्रका शिष्य बतलाता है–

श्रुतनिधिविमलदयाम्बुधिविततयशोधामनेमिचन्द्रमुनीन्द्रः ।
श्रुतलक्ष्मीद्वितयक्कं सुतनेनिसि सुतत्वदर्शियेंति सुबुदरिदे ॥

श्रवणबेलगुलमें ई० स० १२८३ का लिखा हुआ एक शिलालेख है। उसमें श्रीमन्महामण्डलाचार्य श्रीमूलसंघीय इंगलेश्वरदेशीयगणाग्रगण्य राजगुरु नेमिचन्द्र पण्डितदेवका वर्णन करके उनके शिष्य बालचन्द्रका जिक्र किया है। इससे अनुमान होता है कि उद्योगसारका रचयिता वही बालचन्द्र है।

५९. हस्तिमल्ल—समय ई० स० १२९०। इस कविने ई० स० १२९२ में आदिपुराण नामका ग्रन्थ लिखा है। यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है; परन्तु कुछ समय पहले इसके कुछ अंशका अनुवाद प्रो० पाठकने इंडियन आंटिक्वेरीमें प्रकाशित किया था। देवचन्द्र कविने अपने राजावली ग्रन्थमें एक हस्तिमल्लका ज़िक्र किया है जो गोविन्दभट्टका पुत्र था, हस्तिको दमन करनेसे जिसका हस्तिमल्ल नाम प्रसिद्ध हुआ था, जिसके पार्श्वपण्डित आदि पुत्र थे, जो उभयभाषाकविचक्रवर्ती कहलाता था और जिसका लोकपालार्य नामका शिष्य

था। माल्म नहीं आदिपुराणकी कर्ता और यह हस्तिमल्ल दोनों एक ही हैं अथवा जुदा जुदा। देवचन्द्रवर्णित हस्तिमल्लके बनाये हुए सुभद्राहरण, विक्रान्तकौरवीय, अंजनापवनंजय और मैथिलीपरिणय आदि कई संस्कृतनाटक हैं। विक्रान्तकौरवीय नाटककी प्रशस्तिसे माल्म होता है कि हस्तिमल्लका पिता गोविन्दभट्ट देवागमसूत्रको सुनकर सम्यग्दृष्टि हो गया था। उसके छह पुत्र थे—श्रीकुमार, सत्यवाक्य, देवरवल्लभ, उदयभूषण, हस्तिमल्ल और वर्द्धमान। ये छहों ही स्वर्णयक्षिके प्रसादसे प्राप्त हुए थे और छहों अच्छे कवि थे। इनमेंसे कईके तो कई ग्रन्थ भी मिलते हैं। ये सब दाक्षिणात्य थे।

६०. अट्टकवि या अर्हद्दास—समय ई० स० १३०० के लगभग। यह जैन ब्राह्मण था। गंगवंशीय महाराजा मारसिंहके सेनापति काडमरसके वंशमें इसका जन्म हुआ था। यह अपने नामके साथ जिननगरपति, गिरिनगराधीश्वर आदि विशेषण लिखता है। इससे माल्म होता है कि यह किसी नगरका राजा था। इसके वंशका मूल पुरुष काडमरस बड़ा ही वीर था। बोरेंदुरके जीतनेवाले महाराज मारसिंहका तलकाडु नामका किला था। इस किलेको किसी चक्रवर्ती राजाकी सेनाने घेर लिया था। मारसिंहकी आज्ञासे काडमरसने बड़ी बहादुरीके साथ चक्रवर्तीकी सेना भगा दी, ध्वजा गिरा दी, और बारह सामन्तोंको परास्त करके छोड़ा। इससे राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने काडमरसको २५ ग्रामोंकी एक जागीर पारितोषिकमें दे दी। इस काडमरसकी पन्द्रहवीं पीढ़ीमें नागकुमार नामका पुरुष हुआ। अर्हद्दास इसी नागकुमारका पुत्र था। गंगवंशीय मारसिंह दशवीं शताब्दिके मध्यमें हुआ है। कविके वंशका मूलपुरुष काडमरस इसीका सेनापति था, अतएव उसके बाद १५ पीढ़ी गुजरनेमें लगभग ३०० वर्ष लग गये होंगे, अर्थात् अर्हद्दास ई० सन् १३०० के लगभग हुआ होगा। इसका बनाया हुआ अट्टमत नामका कनड़ी ग्रन्थ है। शककी १४ वीं शताब्दिमें भास्कर नामके आन्ध्रकविने इस ग्रन्थका तेलगूभाषानुवाद किया है। अतएव उससे पहले ई० सन् १३०० के लगभग अर्हद्दासका समय माना जा सकता है। इसका अट्टमत ग्रन्थ समग्र नहीं मिलता। उपलब्ध भागमें वर्षाके चिह्न, आकस्मिक लक्षण, शकुन, वायुचक्र, गोप्रवेश, भूकम्प, भूजातफल, उत्पातलक्षण, परिवेषलक्षण, इन्द्रधनुर्लक्षण, प्रथमगर्भलक्षण, द्रोणसंख्या, विद्युल्लक्षण, प्रतिसूर्यलक्षण, संवत्सरफल, ग्रहद्वेष, मेघोंके नाम-कुल-वर्ण,

ध्वनिविचार, देशवृष्टि, मासफल, राहुचक्र, नक्षत्रफल, सक्रान्तिफल आदि विषय कहे गये हैं। संस्कृतके मुनिसुव्रतकाव्य, भव्यजनकण्ठाभरण, जीवंधरचम्पू, पुरुदेवचम्पू आदि ग्रन्थोंका कर्त्ता अर्हद्दास नामक कवि शायद अट्टमतके रचयितासे भिन्न है।

६१. नाचिराज--समय ई० स० १३००। इसने अमरकोशकी एक कन्नड़ व्याख्या लिखी है जिसे 'नाचिराजीय' कहते हैं।

६२. नविल्गुंद मादिराज--समय ई० स० १३००। द्वितीय गुणवर्मकृत पुष्पदन्तपुराणकी एक प्रतिके अन्तमें दो पद्य लिखे हैं, उनमें प्रतिके लेखकका परिचय दिया है। यह लेखक ही मादिराज कवि था। पद्योंकी रचना देखनेसे मालूम होता है कि यह एक अच्छा कवि था। 'बुधमाधव' इसकी उपाधि थी। लिपि तो इसकी बहुत ही सुन्दर है। साकल्य कुलमें इसका जन्म हुआ था। इसके पिताका नाम चाम और माताका महादेवी था। नविल्गुन्द ग्राममें इसका जन्म हुआ था। पुष्पदन्तपुराण ई० १२२६ के लगभग बना है। उसकी प्रतिलिपि करनेके कारण यह उससे पीछे १३०० के लगभग हुआ होगा। रचनाशैलीसे भी मालूम होता है कि यह इसी समयमें हुआ होगा।

६३ नागराज--समय ई० स० १३३१। यह कौशिकगोत्रोद्भव था। सेचेंबपुरनिवासि जिनशासनदीपक विवेकविट्ठलदेव इसके पिता, भागीरथी माता, तिप्परस भाई और अनन्तवीर्य योगी गुरु थे। इसका 'पुण्यास्रव चम्पु' नामका एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें १२ अध्याय और ५२ कथायें हैं। ग्रन्थवतारमें जिनेन्द्र, पंचपरमेष्ठि, सरस्वती आदिकी स्तुति करके वीरसेनसे लेकर अनन्तवीर्यपर्यन्त गुरुओंको नमस्कार किया गया है। इसके बाद गृहस्थधर्मका विवरण करके तत्सम्बन्धी प्रसिद्ध पुरुषोंकी कथायें लिखी हैं। ग्रन्थकी प्रशस्तिसे मालूम होता है कि इस कविकी सुललितकविताकल्पवल्लीवसन्त, भारतीभालनेत्र, सरस्वतीमुखतिलक, कविमुखमुकुर, उभयकवितावलिस आदि उपाधियाँ थीं। कविने अपने गुरु अनन्तवीर्यकी आज्ञानुसार सगर-नगरनिवासियोंके उपकारके लिए इस ग्रन्थकी रचना की थी। अनुमानसे मैसूर प्रान्तका सागर नामक स्थान ही सगर-नगर होगा। यह किसी संस्कृत ग्रन्थका कनड़ी भाषान्तर है। शक संवत् १२५३ अर्थात् ई० स० १३३१ में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

६४, ६५ यशश्चन्द्र और पुष्पदन्त—समय ई०स० १३५० के लगभग। धर्मनाथपुराणके कर्त्ता मधुर (ई०स० १३८५) और जीवंधरषट्पदीके लेखक भास्कर (१४२३) ने यशश्चन्द्र नामक कविकी स्तुति की है। इसके सिवा मधुरने एक पुष्पदन्त नामक कविका भी स्मरण किया है। परन्तु न तो इन कवियोंका कोई ग्रन्थ उपलब्ध है और न यह मालूम है कि इनके बनाये हुए कौन कौनसे ग्रन्थ हैं। मधुरका समय १३८५ के लगभग है, इसलिए इन दोनों कवियोंका समय उससे पहले १३५० के लगभग माना जा सकता है।

६६. केशव वर्णी—समय ई० स० १३५९। यह अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीका शिष्य था। इसकी बनाई हुई दो कनड़ी टीकायें उपलब्ध हैं। एक अमितगतिश्रावकाचारवृत्ति और दूसरी गोम्मटसारवृत्ति। देवचन्द्र कविका बनाया हुआ एक 'राजावली कथा' नामका ग्रन्थ है। उसमें अनेक कवियोंका वृत्तान्त लिखा है। उससे मालूम होता है कि केशववर्णीने सारत्रय (समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तकाय) की भी टीका लिखी है। मंगराज कविने एक जगह केशव वर्णीका उल्लेख करते समय उसे सारत्रयवेदि विशेषण दिया है। इससे भी मालूम होता है कि उसकी एक सारत्रयकी टीका होगी; परन्तु वह हमें उपलब्ध नहीं हुई। इसने गोम्मटसारकी कर्णाटकी वृत्ति शक संवत् १२८१ (ई० स० १३५९) में धर्मभूषण भट्टारककी आज्ञासे निर्मित की, ऐसा उक्त वृत्तिके अन्तिम पद्योंसे मालूम होता है। ये धर्मभूषण संभवतः न्यायदीपिकाके कर्त्ता होंगे। गोम्मटसारकी संस्कृत टीका भी केशव वर्णीकी बनाई हुई है।

६७. मंगराज—इस नामके तीन कवि हुए हैं। उनमेंसे पहला होयसल देशके देवलिगे प्रान्तके मुख्य पत्तन मुगुळेयपुरका स्वामी था। यह विजयनगरके हरिहर राजाके समयमें हुआ है। आपको यह पूज्यपादका शिष्य बतलाता है। इसकी पत्नीका नाम कामलता था और तीन उसके पुत्र थे। सुललितकविपिकवसन्त, विधुवंशललाम, कविजनैकमित्र, अगणितगुणनिलय, अखिलविद्याजलनिधि, पंचगुरुपदाम्बुजभृंग आदि इसकी विरदावली थी। सारत्रयवेदि केशव वर्णीका इसने स्तवन किया है, इसलिए यह उसका समकालीन या और उससे कुछ ही पीछेका कवि है। हरिहर राजाका भी यही समय है। इसका बनाया हुआ एक खगेन्द्रमणिदर्पण नामका ग्रन्थ है। इसमें स्थावर विषोंकी प्रक्रिया और प्रायः सब ही विषोंकी चिकित्सा लिखी है। यह १६ अध्यायोंमें विभक्त है।

इसके प्रारंभमें पार्श्वनाथ, सिद्ध, सरस्वती, पद्मा, गणधर आदिका स्तवन और समन्तभद्रसे लेकर केशववर्णीपर्यंत विद्वानोंकी स्तुति की है । अन्तमें लिखा है कि यह ग्रन्थ पूज्यपादके वैद्यक ग्रन्थसे संग्रहीत है । वैद्यक ग्रन्थ होने पर भी इसकी कविता सुन्दर काव्यमयी है ।

६८. मंगराज द्वितीय—समय ई० स० १३९४ । यह 'कम्मे' कुलके विश्वामित्र गोत्रीय रेम्मार्य रामरसका पुत्र था । यह अभिनव मंगराजके नामसे प्रसिद्ध है । इसने मंगराजनिघण्टु या अभिनवनिघण्टु नामका कोश लिखा है । कविने शशिपुरके सोमेश्वरके प्रसादसे शक १३२० में अपने कोशग्रन्थको समाप्त किया है ।

६९. मंगराज तृतीय—समय ई० स० १५०९ । यह होयसळ देशके होसवृत्ती प्रान्तके कल्लहल्लि राज्यका स्वामी था और महामण्डलेश्वर चंगाळव राजाके मंत्रीके वंशमें उत्पन्न हुआ था । अपने सब ग्रन्थोंमें यह आपको कल्लहल्लिनरेश विजयेन्द्रका पुत्र बतलाता है । यह सम्यक्त्वकौमुदी, जयकुमारषट्पदी, नेमिजिनेशसंगीत, पाकशास्त्र, प्रभंजनचरित, और श्रीपालचरित इन छह ग्रन्थोंका रचयिता है । सम्यक्त्वकौमुदीकी रचना इसने शक १४३१ में की है । श्रवणबेलगोलाका १०८ वाँ संस्कृत शिलालेख—जो शक १४४३ का लिखा हुआ है—इसी मंगराज कविका लिखा हुआ है । उक्त लेखमें कवि अपने विषयमें इस प्रकार लिखता है:—

प्रबन्धध्वनिसम्बन्धा सद्रागोत्पादनक्षमा ।
मङ्गराजकवेर्वाणी वाणीवीणायते तराम् ॥

७०. अभिनव श्रुतमुनि—समय ई० स० १३६५ । इसने मल्लिषेणसूरिकृत सज्जनचित्तवल्लभकी कर्णाटकी व्याख्या लिखी है ।

७१. मधुर—समय ई० स० १३८५ । यह वाजिवंशके भरद्वाजगोत्रमें उत्पन्न हुआ था । पिताका नाम विष्णु और माताका नागाम्बिका था । बुक्कराजके पुत्र हरिहरराजका मंत्री इसका पोषक था । 'भूतनाथास्थानचूडामणिमधुरकवीन्द्र' इस विशेषणसे यह हरिहररायका अस्थानकवि या सभाकवि था, ऐसा मालूम होता है । कविविलास, कविराजकलाविलास, कविमाधवमधुरमाधव, सरलकविरसालवसन्त, भारतीमानसकेलिराजहंस, विश्वविद्यासमुदयसुमनस्संचरच्चञ्चरीक आदि उपाधियाँ या विशेषण इसके नामके साथ जोड़े जाते थे । इसके बनाये हुए

केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, एक धर्मनाथपुराण और दूसरा गुम्मटाष्टक। इनमेंसे धर्मनाथपुराणकी समग्र प्रति मिलती नहीं है। जितना भाग प्राप्त है उससे मालूम होता है कि यद्यपि यह चौदहवीं शताब्दिका कवि था, तो भी इसकी रचना पिछले कवियोंके समान प्रौढ़, हृदयहारिणी और सुन्दर है। इसके बहुतसे पद्य सोलहवीं शताब्दिके अभिनववादि विद्यानन्दिने अपने काव्यसारमें और सत्रहवीं शताब्दिके भट्टाकलंकने अपने शब्दानुशासनमें उद्धृत किये हैं।

७२. जिनाचार्य—समय ई० स० १४००। सोलहवीं शताब्दिमें शृङ्गारक-विराजहंस नामका एक कवि हो गया है। उसने अपने रत्नाकराधीश्वरशतक नामक ग्रन्थमें अग्गल (११८९), नेमि (११७१), रन्न (९९३), कुमुदेन्दु (१२७५) आदि कवियोंके साथ साथ जिनाचार्य नामक कविका भी उल्लेख किया है। इससे मालूम होता है कि इसने भी कुछ रचना की होगी जो कि इस समय उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट।

७३. शान्तिनाथ—समय ई० स० १०६८। शिखरिपुरके १३६ वें शिला-लेखसे मालूम होता है कि इसने 'सुकुमारचरित' नामक ग्रन्थ लिखा है। उक्त शिलालेख शक संवत् ९९० का लिखा हुआ है। यह भुवनैकमल्ल (१०६८–१०७६) पराजित लक्ष्म नृपातिका मंत्री था। इसके उपदेशसे लक्ष्म नृपतिने बलिग्राममें शान्तिनाथ भगवानका मन्दिर बनवाया था। इसके पिता गोविन्द-राज, भाई कन्नपार्य और गुरु वर्धमान व्रती थे। जिनमताम्भोजिनीराजहंस, सरस्वतीमुखमुकुर, सहज कवि, चतुर कवि, निस्सहाय कवि आदि इसके विरद हैं।

७४. रवाकोट्याचार्य—समय ई० सन् ११८०। इसके एक ग्रन्थके कुछ भागका अनुवाद इंडियन आन्टिकेरी वाल्यूम XII पेज ९६ में प्रकाशित हुआ है।

७५. मल्लिषेण—समय ई० स० १०४३। ये उभयभाषाकविचक्रवर्ति मल्लिषेणके नामसे प्रसिद्ध हैं। संस्कृतमें इनके तीन ग्रन्थ मिलते हैं–महापु-राण, नागकुमारचरित और सज्जनचित्तवल्लभ। महापुराणकी रचना इन्होंने शक सं० ९६५ की ज्येष्ठ शुदी ५ को मूलगुंद नामक तीर्थके मन्दिरमें समाप्त की थी। यह स्थान धारवाड़ जिलेके गदग तालुकामें है। इन्होंने अपने पिताका नाम जिनसेनसूरि लिखा है। इनका कोई कनड़ी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।

समाप्त।

कवियोंकी वर्णानुक्रमिक सूची ।

नं०	कविनाम	पृष्ठसंख्या.
४०	अग्गल	२४
६०	अड्डकवि या अर्हद्दास	३१
५२	अण्डय्य	२५
७०	अभिनव श्रुतमुनि	३४
४१	आचण्ण	२४
१४	आदि पंप	७
७	उदयादित्य	६
३३	उदयादित्य	१९
५१	कमलभव	२८
३२	कर्णपार्य	१८
४६	कल्लय्य	२६
२	कविपरमेष्ठी	४
२२	कविमल्ल	१३
२७	कन्ति	१५
३०	कीर्तिवर्म्मा	१७
५७	कुमदेन्दु	३०
६६	केशववर्णी	३३
४३	केशियण्ण	२५
५४	केशिराज	[illegible]
२१	गजांकुश	[illegible]
१३	गुणन[illegible]	[illegible]
२०	गुण[illegible]	१२
५०	गुणवर्म ([illegible])	[illegible]
१७	चामुण्डराय	[illegible]
८	जयबन्धुनन्दन	६
४७	जन्न	२६

नं०	कविनाम	पृष्ठसंख्या.
७२	जिनाचार्य	३५
२४	दामराज	१४
९	दुर्विनीत	६
२८	नयसेन	१५
६३	नविल्गुंद मादिराज	३२
२६	नागचन्द्र	१४
६३	नागराज	३२
६१	नाचिराज	३२
१८	नागवर्मा	११
१९	नागवर्मा	१२
२३	नागवर्मोचार्य	१३
७	नागार्जुन	६
१२	नृपतुंग	७
३७	नेमिचन्द्र	२१
११	पण्डितार्य	७
४५	पार्श्वपण्डित	२५
३	पूज्यपाद	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	[illegible]	[illegible]
४३	[illegible]	[illegible]
२५	बालचन्द्र	२१
५२	[illegible]	[illegible]
	कविकन्दर्प	[illegible]
५६	बालचन्द्र	३०
५८	बालचन्द्र	२५

नं०	कविनाम	पृष्ठसंख्या
३५	बूचिराज	३०
३९	बोप्पण पण्डित	२३
७१	मधुर	३४
७५	मल्लिषेण	३५
५३	महाबलकवि	२९
४८	मुनिचन्द्र	२७
६७	मंगराज	३३
६८	मंगराज (द्वितीय)	३४
६४-६५	यशश्चन्द्र और पुष्पदन्त	३३
१६	रन्न	९
२९	राजादित्य	१६
७४	रविकोट्याचार्य	३५
४४	वासुदेव	२५
५	विमलचन्द्र	६
३५	वृत्तिविलास	२०
७३	शान्तिनाथ	३५
४९	शिशुमायण	२७
[illegible]	[illegible] शैखवर्म	१४
[illegible]	श्रीवर्धदेव	५
[illegible]	[illegible]	६
[illegible]	[illegible]तभद्र	३
५५	समुदायकर माघनंदि	२९
३४	सुमनोबाण	१९
५९	हस्तिमल्ल	३०

ग्रन्थकर्ताकी और और पुस्तकें।

		कीमत
१	विद्वद्रत्नमाला—नौ जैन विद्वानोंकी बड़ी खोजसे लिखा हुआ जीवनचरित	॥=)
२	दिगम्बरजैनग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रन्थ—(मिलती नहीं)	
३	उपमितिभवप्रपंचा कथा—प्रथम भाग	॥।)
४	„ द्वितीय भाग	।)
५	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—(हिन्दी अर्थ)	१।)
६	प्राणप्रियकाव्य—सार्थ	=)
७	प्रतिभा—उपन्यास	१।)
८	फूलोंका गुच्छा	॥=)
९	मिलसाहबकी जीवनी	।)
१०	भक्तामरस्तोत्र भाषाटीका और पद्य	।)

पता—

मैनेजर,

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, पो० गिरगांव, बम्बई।

जैनियोंका सर्वोत्तम मासिक पत्र

जैनहितैषी ।

यदि आपको जैनधर्मके प्राचीन आचार्यों विद्वानों और राजामहाराजाओंके चरित पढ़ना है, प्राचीन इतिहासकी बातें जानना है, ऊँचे दर्जेके सामाजिक धार्मिक और साहित्यसम्बन्धी लेख देखना है, चटकीले मनोरंजक और शिक्षाप्रद उपन्यासोंका स्वाद लेना है, सच्ची समालोचनायें और टिप्पणियाँ पढ़ना है, तो इस मासिकपत्रके ग्राहक बन जाइए। इसकी प्रत्येक लाइन विचारपूर्वक लिखी जाती है। रिपोर्टों और हिसाबोंसे इसके पेज नहीं भरे जाते। जैनसमाजके जितने अच्छे लेखक हैं, वे सब इस पत्रमें लिखते हैं। प्रतिष्ठा भी इसकी सबसे अधिक है। छपाई बहुत अच्छी होती है। ६४ पृष्ठोंपर निकलता है। वार्षिक मूल्य २) रु० है। उपहार भी दिया जाता है। दिवालीसे वर्ष प्रारंभ होता है। प्रारंभसे ही ग्राहक बनाये जाते हैं। जैनी मात्रको इस पत्रके ग्राहक बनना चाहिए।

निवेदक—

मैनेजर, जैनहितैषी–गिरगांव–बम्बई ।